



खंड 3

विकासात्मक प्रक्रियाएँ

Pignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड 3 विकास प्रक्रियाएं

परिचय

पाठ्यक्रम के तीसरे खंड में तीन इकाइयां शामिल हैं। खंड की **पहली इकाई** चर्चा करती है मानव विकास की प्रकृति और सिद्धांत। इकाई विकास, मुद्दों और मनुष्यों के विकास में चरणों के अर्थ पर चर्चा करता है और फिर अलग रखाविकास में शामिल चरणों की अवधारणा करता है। यह विकास में महत्वपूर्ण अवधि के महत्व को भी समझाता है। **दूसरी इकाई** विकास के चरणों के बारे में चर्चा करती है। मानव विकास शिशु के जन्म से पहले ही शुरू हो जाता है (प्रसव पूर्व अवस्था)। जीवन काल विकास महत्वपूर्ण सामान्य विकासात्मक अवस्थाएँ जिनसे मनुष्य गुजरता है से संबंधित हैं: जन्म, शैशवावस्था, किशोरावस्था, वयस्कता, बुढ़ापे और अंत में मृत्यु। जैसे-जैसे मनुष्य एक अवस्था से दूसरे चरण में बढ़ता जाता है वे अपने शरीर के अंगों का उपयोग करना सीखते हैं, खुद को व्यक्त करना और संवाद करना सीखते हैं दूसरों के साथ, दूसरों के साथ संबंध कैसे बनाएं, दूसरों की देखभाल कैसे करें, कैसे प्यार करें और कैसे करें काम। इस इकाई में हम मानव विकास के दो प्रमुख सिद्धांतों पर चर्चा करेंगे, सिगमंड फ्रायड के मनोवैज्ञानिक विकास का सिद्धांत और एरिकसन के विकास का सिद्धांत।

तीसरी इकाई में नैतिक और संज्ञानात्मक विकास शामिल है। यह इकाई दो प्रमुख से संबंधित है संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत अर्थात्, पियागेट के विकास के संज्ञानात्मक सिद्धांत और व्यंगोत्स्की का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत। फिर, इकाई नैतिक पर भी चर्चा करती है कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत की मदद से विकास।

THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 7 मानव विकास की प्रकृति और सिद्धांत*

इकाई की रूपरेखा

- 7.0 परिचय
- 7.1 उद्देश्य
- 7.2 मानव विकास
 - 7.2.1 मानव विकास के सामयिक क्षेत्र
- 7.3 जीवन अवधि विकास की परिभाषा
- 7.4 विकास को प्रभावित करने वाले कारक
- 7.5 मानव विकास के मुद्दे
- 7.6 विकास की अवधि
- 7.7 जीवन-विकास पर परिप्रेक्ष्य
- 7.8 विकास पर प्रासंगिक प्रभाव
- 7.9 महत्वपूर्ण अवधि परिकल्पना
- 7.10 सारांश
- 7.11 इकाई अभ्यास प्रश्न
- 7.12 शब्दकोश
- 7.13 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर
- 7.14 संदर्भ और सुझाव रीडिंग

7.0 परिचय



चित्र 1 : सुजीत कुमार - फिजी का चिकन बॉय

स्रोत: <http://www.technogypsie.com>

सुजीत ने एक बच्चे के रूप में शिथिल व्यवहार का प्रदर्शन किया। उनके माता-पिता ने उन्हें मुर्गों के पिंजरे में बंद कर दिया। उनकी माँ ने आत्महत्या कर ली और उनके पिता की हत्या कर दी गई। उनके दादा ने उसकी जिम्मेदारी ली लेकिन फिर भी उस पिंजरे में सीमित

* डॉ. ममता शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला और डॉ. आरती सिंह (इग्नू) (बीपीसी 002, खंड 1 से अनुकूलित कुछ सामग्री)

रखा। जब वह आठ साल का था, तब वह एक सड़क के बीच में टकरा रहा था और फड़फड़ा रहा था। वह अपने भोजन पर झांकता था, कुर्सी पर बैठकर रोता था, और तेजी से अपनी जीभ से शोर करता था। उसकी उंगलियां अंदर की ओर मुड़ी हुई थीं। उन्हें देखभाल कर्मियों द्वारा एक बूढ़े व्यक्ति के घर ले जाया गया था, लेकिन वहां, क्योंकि वह बहुत आक्रामक था, वह 20 वर्षों से बिस्तर पर चादर से बंधा हुआ था। अब उसकी उम्र 40 वर्ष से अधिक है, उसकी देखभाल एलिजाबेथ क्लेटन ने की, जिन्होंने उसे घर से निकाल दिया।

स्रोत <http://www.technogypsie.com/faerie/?p=2309>

कई मनोवैज्ञानिकों द्वारा देखभाल करने के बाद भी, सुजीत कुमार अन्य लोगों की तरह बात करने और चलने में सक्षम नहीं है। इतने सालों के बाद इंसानों के साथ रहने के बावजूद सुजीत इंसानों की भाषा में चलना और सीखना क्यों नहीं सीख पा रहे हैं? आपको क्या लगता है कि इस विफलता का कारण क्या हो सकता है? मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इसका कारण महत्वपूर्ण समय के भीतर आवश्यक व्यवहार को सीखने में सक्षम नहीं हो पाना है। लेकिन विकास की महत्वपूर्ण अवधि क्या है? इसे समझने के लिए हमें सबसे पहले विकास की अवधारणा को समझना होगा। वर्तमान इकाई इसलिए मानव के विकास का अर्थ, मुद्दों और चरणों के अर्थ पर चर्चा करेगी, और फिर विकास में शामिल चरणों के विभिन्न गर्भधान को आगे बढ़ाएगी। यह विकास में महत्वपूर्ण अवधि के महत्व को भी बताता है

7.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न कार्य कर सकेंगे:

- मानव विकास को परिभाषित और वर्णित;
- जीवन काल विकास को परिभाषित;
- मानव विकासात्मक अवधियों की पहचान;
- मानव विकास में शामिल प्रमुख मुद्दों की व्याख्या;
- विकास पर प्रासंगिक प्रभाव को समझ सकेंगे; तथा
- महत्वपूर्ण अवधि के महत्व का वर्णन कर सकेंगे।

7.2 मानव विकास

विकास पूरे गर्भधान से लेकर मृत्यु तक के जीवनकाल में मनुष्यों की वृद्धि का वर्णन करता है। विकास केवल विकास के जैविक और भौतिक पहलुओं को शामिल नहीं करता है, बल्कि विकास से जुड़े संज्ञानात्मक और सामाजिक पहलुओं को भी शामिल करता है। मानव विकास का वैज्ञानिक अध्ययन यह समझने और समझाने का प्रयास करता है कि लोग जीवन भर कैसे और क्यों बदलते हैं। यह क्षेत्र मोटर कौशल और अन्य मनोवैज्ञानिक शारीरिक प्रक्रियाओं सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला में परिवर्तन की जांच करता है। संज्ञानात्मक विकास में समस्या समाधान, नैतिक समझ और वैचारिक समझ; भाषा अधिग्रहण; सामाजिक, व्यक्तित्व और भावनात्मक विकास; और स्व-अवधारणा और पहचान गठन जैसे क्षेत्र शामिल हैं। विकास का वैज्ञानिक अध्ययन न केवल मनोविज्ञान के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि समाजशास्त्र, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल के लिए भी महत्वपूर्ण है। लोग कैसे और क्यों बदलते हैं और विकसित होते हैं, इसे बेहतर तरीके से समझकर, कोई भी इस ज्ञान द्वारा लोगों को उनकी पूरी क्षमता से जीने में मदद करने के लिए लागू कर सकता है।

7.2.1 मानव विकास के सामयिक क्षेत्र

इस खंड में, हम उन क्षेत्रों पर संक्षेप में चर्चा करेंगे, जो विकासात्मक या जीवन के मनोवैज्ञानिकों के बीच जांच का हिस्सा हैं। इस तरह के प्रमुख चार क्षेत्र निम्नलिखित हैं:

- **शारीरिक विकास** : इसमें हमारे शरीर के उन पहलुओं का अध्ययन करना शामिल है जो शारीरिक विकास के लिए जिम्मेदार हैं जैसे मस्तिष्क, तंत्रिका तंत्र, जीन, हार्मोन्स और पोषण की उपलब्धता आदि।
- **संज्ञानात्मक विकास** : इस क्षेत्र का यह समझने में है मदद करता है कि विकास और भौतिक परिवर्तनों के साथ बौद्धिक क्षमता कैसे बदलती है।
- **व्यक्तित्व विकास** : यह क्षेत्र जीवन भर व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास या परिवर्तन का अध्ययन करता है। इसके अलावा, इसका उद्देश्य लोगों के बीच व्यक्तिगत मतभेदों को समझना है। उनके व्यक्तित्व की संरचना के संबंध में।
- **सामाजिक विकास** : इस क्षेत्र के तहत, मनोवैज्ञानिक यह समझने का प्रयास करते हैं कि लोग कैसे दूसरे लोगों के साथ बातचीत करते हैं और एक दूसरे के साथ संबंध बनाते हैं। यह उन कारकों पर भी ध्यान केंद्रित करता है जो सामाजिक विकास को प्रभावित करते हैं।

यहाँ याद रखने वाली बात यह है कि ये चार डोमेन या क्षेत्र स्वतंत्र नहीं हैं, बल्कि अतिव्यापित (ओवरलैपिंग) हैं।

7.3 जीवन अवधि विकास की परिभाषा

हम जीवन काल के विकास को निम्नलिखित रूप से परिभाषित कर सकते हैं:

“परिवर्तन का प्रतिरूप जो गर्भाधान से शुरू होता है और जीवन चक्र के माध्यम से जारी रहता है।”

उम्र के साथ-साथ जीवन के विकास को एक व्यवस्थित, अंतर-व्यक्तिगत परिवर्तन के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है। विकास कामकाज के स्तर को दर्शाता है। जीवन-काल विकासात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान का क्षेत्र है जिसमें संपूर्णता और मानव व्यवहार में परिवर्तन दोनों की परीक्षा शामिल है।

जीवन काल, यानी गर्भाधान से मृत्यु तक (बालट्स, 1987)। विकास विभिन्न क्षेत्रों में होता है, जैसे कि जैविक (हमारे भौतिक में परिवर्तन), सामाजिक (हमारे सामाजिक रिश्तों में परिवर्तन), भावनात्मक (हमारी भावनात्मक समझ और अनुभवों में परिवर्तन), और संज्ञानात्मक (हमारी विचार प्रक्रियाओं में परिवर्तन)। कुछ विकासात्मक मनोवैज्ञानिक विकास की धारणा को केवल उन परिवर्तनों तक सीमित करना पसंद करते हैं जो व्यवहार, कौशल या क्षमता (2000 की संरचना) में गुणात्मक पुनर्गठन करते हैं। एक अन्य दृष्टिकोण (एजुकेशनल फाउंडेशन, 2001) के अनुसार जीवन काल विकास एक प्रक्रिया है जो गर्भाधान से शुरू होती है और मृत्यु तक जारी रहती है। प्रगति एक कोशिका वाले जीव से एक भ्रूण के उद्भव के साथ शुरू होती है। जैसे ही अजन्मा बच्चा दुनिया में प्रवेश करता है, वह वातावरण जिसमें बच्चे का अस्तित्व होता है, बच्चे के विकास को प्रभावित करने लगता है। लेविंसन के अनुसार, जीवन चक्र में चार 25 वर्ष के युग होते हैं। मुख्य विकास अवधि बच्चे और किशोरावस्था, प्रारंभिक वयस्कता, मध्य वयस्कता और देर से वयस्कता हैं। प्रत्येक युग के परिवर्तन में व्यक्ति के जीवन के चरित्र में एक आवश्यक परिवर्तन शामिल होता है और

परिवर्तन को पूरा करने में कभी-कभी छह साल तक का समय लग जाता है (स्मिथ, 2009)। मानव विकास का अध्ययन डार्विन और अन्य विकासवादियों के साथ शुरू हुआ। डार्विन ने सोचा कि अगर उन्होंने मानव विकास का अध्ययन किया तो वे विकास के अपने सिद्धांत (बॉयड एंड बी, 2006) को साबित कर सकते हैं। रटर एंड रटर (1992) ने मनुष्यों के संबंध में विकास की एक कार्यशील परिभाषा के रूप में निम्नलिखित का उपयोग किया। उन्होंने कहा कि जीवन काल विकास एक व्यवस्थित, संगठित, अंतर-व्यक्तिगत परिवर्तन है जो स्पष्ट रूप से आम तौर पर अपेक्षित आयु से संबंधित प्रगति के साथ जुड़ा हुआ है और जिसे किसी व्यक्ति के पैटर्न या स्तर के लिए निहितार्थ के रूप में आगे बढ़ाया जाता है। कुछ समय बाद कार्य करना।

7.4 विकास को प्रभावित करने वाले कारक

विकासात्मक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, कई कारक मानव विकास और विकास को प्रभावित कर सकते हैं। कुछ प्रमुख कारक इस प्रकार हैं:

- 1) **आनुवांशिकता:** वह जीन जो हम अपने माता-पिता और पूर्वजों से प्राप्त करते हैं, निश्चित रूप से विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। न केवल भौतिक विशेषताएं बल्कि सामाजिक विशेषताएं भी इन जीनों के माध्यम से माता-पिता से वंशज तक प्रेषित की जाती हैं। आपकी आंखों का रंग, ऊंचाई, बाल, बुद्धि और योग्यता सब कुछ आपके जीन पर काफी निर्भर करता है।
- 2) **लिंग:** लिंग एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारक है जो मानव विकास और विकास को प्रभावित करता है। सेक्स में अंतर से विकास के प्रतिरूप और विकास के प्रतिरूप में अंतर होता है। अध्ययनों ने सुझाव दिया है कि किशोर लड़कियों की शारीरिक वृद्धि लड़कों की तुलना में तेज है।
- 3) **सामाजिक आर्थिक:** सामाजिक आर्थिक कारकों को कई स्तरों पर प्रभावित किया गया है। बेहतर सामाजिक स्तर के बच्चों में बेहतर खुफिया स्तर, बेहतर ऊंचाई और बेहतर मानसिक स्वास्थ्य पाया गया। इसके पीछे सबसे महत्वपूर्ण कारण बेहतर पोषण, बेहतर सुविधाएं, नियमित भोजन, नींद और व्यायाम हैं।
- 4) **हार्मोन (ग्रंथीरस):** हमारे शरीर को कई हार्मोनल गतिविधियों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। हार्मोन के ऐसे महत्वपूर्ण समूह में से एक को अंतःस्रावी ग्रंथियों के रूप में जाना जाता है। ये ग्रंथियां हार्मोन को सीधे हमारे रक्तप्रवाह में स्रावित करती हैं और इस प्रकार विकास और विकास की प्रक्रिया को नियंत्रित करती हैं। किसी भी हार्मोन के अंडरसेक्रेशन या ओवरसिरेक्शन से असामान्य विकास हो सकता है।
- 5) **पोषण:** हमारे शरीर को इष्टतम विकास के लिए अच्छी मात्रा में कैलोरी और पोषण की आवश्यकता होती है। चूंकि, विकास सीधे पोषण से संबंधित है, खराब पोषण या कुपोषण से कई समस्याएं हो सकती हैं जैसे कि कम वजन, कम ऊंचाई, और उम्र के लिए कम ऊंचाई, स्टंटिंग के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा, कुपोषित भी समग्र विकास प्रक्रिया को धीमा कर सकता है।
- 6) **नस्लवाद:** हर दौड़ की अपनी अनोखी शारीरिक विशेषताएं होती हैं। इसलिए, आपकी नस्लवाद, ऊंचाई, वजन और रंग के आधार पर आपकी त्वचा बदलती है।

- 7) **संस्कृति:** हर संस्कृति के अपने विशिष्ट मूल्य, रीति-रिवाज, आचार संहिता, अपेक्षाएं और उपयुक्त पालन-पोषण के तरीके होते हैं। संस्कृति में ये अंतर विकासात्मक प्रक्रियाओं को काफी प्रभावित करते हैं।

7.5 मानव विकास के मुद्दे

मानव विकास के अध्ययन में कई प्रमुख मुद्दे सामने आए हैं। इन मुद्दों में निम्नलिखित शामिल हैं: क्या विकास आनुवांशिकी या पर्यावरण के कारण अधिक है? क्या विकास धीरे-धीरे और सुचारू रूप से होता है, या चरणों में परिवर्तन होता है? क्या बचपन के शुरुआती अनुभवों का विकास पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है, या बाद की घटनाएं समान रूप से महत्वपूर्ण हैं?

निरंतरता और निर्लिप्तता : यह सवाल कि क्या विकास केवल और समान रूप से निरंतर है, या क्या यह आयु-विशिष्ट अवधि द्वारा चिह्नित है। विकासात्मक मनोवैज्ञानिक विकास को एक अपेक्षाकृत प्रक्रिया के रूप में वर्णित करते हैं, जिसमें व्यक्ति को किसी चरणों से नहीं गुजरना पड़ता है। अर्थात्, व्यवहार, कौशल या ज्ञान के क्रमिक संचय की एक प्रक्रिया के रूप में विकास की कल्पना की जाती है। इसके विपरीत, जो दूसरे दृष्टिकोण को धारण करते हैं, वे सुझाव देते हैं कि विकास एक निरंतर प्रक्रिया नहीं है। वे विकास को असतत चरणों की एक श्रृंखला के रूप में वर्णित करते हैं, जिनमें से प्रत्येक चरण की विशेषता है कि अतीत में क्या हुआ था और उस अवधि के विकास कार्यों को पूरा करने में बच्चा कितना सक्षम था आदि की विशेषता पर आधारित होता है। इन सिद्धांतकारों का सुझाव है कि व्यवहार या कौशल अक्सर समय के साथ गुणात्मक रूप से बदलते हैं, और यह कि नए संगठन व्यवहार, कौशल, या ज्ञान के बजाय एक अचानक या असतत रूप में उभरते हैं।

स्थिरता और परिवर्तन: एक अन्य मुद्दा जो विकास मनोवैज्ञानिकों के लिए महत्वपूर्ण है, स्थिरता बनाम परिवर्तन का मुद्दा है। क्या विकास में स्थिरता की विशेषता होती है, उदाहरण के लिए, व्यवहार या विशेषता जैसे शर्मिलापन समय के साथ अपनी अभिव्यक्ति में स्थिर रहता है या बदलता है, उदाहरण क्या किसी व्यक्ति के जीवनकाल में शर्मिलेपन की डिग्री में उतार-चढ़ाव आ सकता है?

प्रकृति बनाम पोषण : क्या बच्चे द्वारा विकसित व्यवहार अंततः वंशानुगत कारकों या पर्यावरणीय कारकों के कारण होता है। यह मुद्दा मनोवैज्ञानिकों के लिए बहुत महत्व का है। वंशानुक्रम और पर्यावरण के सापेक्ष योगदान पर बहस दर्शन और मनोविज्ञान दोनों विषयों में सबसे पुराने मुद्दों में से एक है। यह बहस उस सापेक्ष डिग्री की चिंता करती है जिसके लिए आनुवंशिकता और सीखना व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। आनुवंशिक लक्षण और पर्यावरणीय परिस्थितियां दोनों ही एक व्यक्ति के विकास में शामिल हैं, हालांकि प्रभाव की मात्रा दोनों में स्पष्ट नहीं है। वास्तव में यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति और उसकी परिस्थितियाँ यह तय करती हैं कि व्यवहार, आनुवंशिकता के कारकों और पर्यावरणीय कारकों से कितना प्रभावित होता है। आज अधिकांश मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि यह इन दो बलों के बीच के तालमेल से विकास होता है। विकास के कुछ पहलू विशिष्ट रूप से जैविक हैं, जैसे कि यौवन। हालांकि, युवावस्था की शुरुआत आहार और पोषण जैसे पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित हो सकती है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

खाली जगह भरें

- 1) हमारे रक्तप्रवाह में सीधे हार्मोन का स्राव करते हैं और इस प्रकार विकास और विकास की प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं।
- 2) एक प्रक्रिया गर्भाधान से शुरू होती है जो मृत्यु तक जारी रहती है।
- 3) मानव विकास का अध्ययन से शुरू हुआ।
- 4) विकास सीधे से संबंधित है।
- 5) दोनों और एक व्यक्ति के विकास में शामिल हैं।

7.6 विकास की अवधि

मानव विकास की अवधि से गर्भाधान से जीवन के अंत तक की होती है। ये अवधियाँ इस प्रकार हैं, प्रसवपूर्व, प्रारंभिक, मध्य और बाद का बचपन, युवावस्था, किशोरावस्था, युवा वयस्कता, प्रारंभिक, मध्य और बाद की वयस्कता। जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता है और वयस्कता के करीब आता है, किशोरावस्था, प्रारंभिक, मध्य और बाद की वयस्कता के चरण में पहुँचता है। विकास की अवधि और एक अवधि से अगली अवधि की गतिशीलता के बारे में कई सिद्धांत सामने रखे गए हैं। विभिन्न सिद्धांत यह परिभाषित करने का प्रयास करते हैं कि एक स्तर से विकास का अगला स्तर किस तरह से गतिमान होता है (बॉयड एंड बी, 2006)। विकास की अवधि नीचे तालिका में दी गई है। प्रत्येक अवधि में व्यक्ति द्वारा पूरा करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कार्य होते हैं और कार्यों की सफलता या पूर्णता के आधार पर, विकास के अगले चरण की ओर अग्रसर होता है। ये अवधि नीचे दी गई हैं:

तालिका 1 : मानव विकास के प्रमुख काल

अवधि	अनुमानित आयु	सीमा संक्षिप्त विवरण
जन्म के पूर्व का	गर्भाधान से लेकर जन्म तक	एक-कोशिका वाले जीव गर्भ के बाहर के जीवन को समायोजित करने की उल्लेखनीय क्षमता वाले मानव बच्चे में बदल जाते हैं।
शैषव और डगमगाते	जन्म- 2 वर्ष	शरीर और मस्तिष्क में नाटकीय परिवर्तन मोटर, अवधारणात्मक और बौद्धिक क्षमताओं की एक विस्तृत श्रृंखला के उद्भव करते हैं और दूसरों से अंतरंग संबंध बनाते हैं
बचपन	2-6 वर्ष	“खेल के वर्षों” के दौरान, मोटर कौशल को परिष्कृत होता है, विचार और भाषा का विस्तार होता है, नैतिकता की भावना स्पष्ट होती है, और बच्चे, साथियों से संबंध स्थापित करना शुरू करते हैं।
मध्य बचपन	6-11 वर्ष	स्कूल के वर्षों में एथलेटिक क्षमताओं में प्रगति द्वारा चिह्नित किया जाता है; तार्किक विचार प्रक्रियाएं; बुनियादी साक्षरता कौशल; स्वयं,

		नैतिकता और दोस्ती की समझ; और साथियों में सदस्यता ।
किशोरावस्था	11-18 वर्ष	यौवन एक वयस्क आकार के शरीर और यौन परिपक्वता की ओर जाता है। विचार सारगर्भित और आदर्शवादी और स्कूली उपलब्धि अधिक गंभीर हो जाती है। किशोरों का ध्यान व्यक्तिगत मूल्यों और लक्ष्यों को परिभाषित करने और परिवार से स्वायत्तता स्थापित करने पर केंद्रित हो जाता है।
जल्दी वयस्कता	18-40 वर्ष	अधिकांश युवा घर छोड़ देते हैं, अपनी शिक्षा पूरी करते हैं, और पूर्णकालिक काम शुरू करते हैं। उनकी प्रमुख चिंता एक व्यवसाय विकसित करना, अंतरंग साझेदारी बनाना; और शादी करना, बच्चों का पालन-पोषण करना या अन्य जीवन शैली स्थापित करना होता है।
मध्य वयस्कता	40-65 वर्ष	कई लोग अपने करियर की ऊँचाई पर हैं और नेतृत्व की स्थिति प्राप्त करते हैं। वे अपने बच्चों को स्वतंत्र जीवन शुरू करने में उनके माता-पिता को बढ़ रही उम्र के अनुकूल करने में मदद करते हैं। वे अपनी स्वयं की मृत्यु दर के बारे में अधिक जागरूक हो जाते हैं।
देर से वयस्कता	65-मौत	लोग स्वयं को शारीरिक शक्ति और स्वास्थ्य में कमी और अक्सर जीवनसाथी की मृत्यु सेवानिवृत्ति के लिए समायोजित करते हैं। वे अपने जीवन के अर्थ को दर्शाते हैं।

स्रोत : बर्क, एल.ई. (2007)

7.7 जीवन-विकास पर परिप्रेक्ष्य

पॉल बालटस (1987) द्वारा प्रस्तावित जीवन-अवधि के परिप्रेक्ष्य में विकास को कई कारकों का परिणाम बताया गया है। सिद्धांतकार, जो विकास के दृष्टिकोण पर जीवन के दृष्टिकोण को आजीवन प्रक्रिया के रूप में देखने का समर्थन करते हैं, वो सभी आयु अवधि को समान महत्व देते हैं। पॉल बालटस और उनके सहयोगियों ने जीवन के परिप्रेक्ष्य के पाँच अंतर्निहित सिद्धांतों की पहचान की है:

- विकास आजीवन होता है;
- विकास बहुआयामी है;
- विकास बहु दिशात्मक होता है
- विकास में अत्याधिक लचीलापन है;
- विकास विभिन्न कारकों के अंतःक्रिया से प्रभावित होता है।
- विकास कई अंतःक्रियात्मक कारकों से प्रभावित होता है

1) **विकास आजीवन होता है:** यह धारणा या सिद्धांत बताता है कि सभी आयु अवधि विकास में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और किसी भी आयु अवधि या

विकास चरण अन्य की तुलना में जीवन के पाठ्यक्रम पर इसके प्रभाव में सर्वोच्च नहीं है। इसलिए, विकास केवल एक हिस्से में या अन्य चरणों में जगह लेने के बजाय पूरे जीवन में होता है।

- 2) **विकास बहुआयामी है:** बहुआयामी शब्द यहाँ तथ्य को संदर्भित करता है। विकास एक आयाम में नहीं हो सकता, बल्कि यह सभी आयामों (भौतिक, व्यक्तित्व, संज्ञानात्मक और सामाजिक) में विकास का परिणाम है।
- 3) **विकास बहुदिशात्मक होता है:** यह धारणा बताती है कि विकास का कोई एकल और निश्चित मार्ग नहीं है। विकास का मतलब यह नहीं है कि हमेशा विकास होगा, बल्कि, विकास के किसी भी बिंदु पर विकास और गिरावट की संयुक्त अभिव्यक्ति हो सकती है।
- 4) **विकास में अत्यधिक लचीलापन है:** लचीलापन का मतलब है कि हमारे पास अनुकूलन और संशोधित करने की क्षमता है। इसका मतलब है कि व्यक्ति अपने जीवन काल में कौशल और क्षमता विकसित कर सकता है।
- 5) **विकास विभिन्न कारकों के अंतःक्रिया से प्रभावित होता है:** विकासात्मक प्रक्षेपवक्र को केवल एक कारक प्रभावित नहीं करता है बल्कि विकासात्मक प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कई परस्पर क्रिया कारक हैं। बालटस के अनुसार, इस तरह के तीन कारकों में आयु-वर्गीकृत श्रेणी प्रभाव, इतिहास-वर्गीकृत प्रभाव और गैर-मानक प्रभाव शामिल हैं।

आयु-श्रेणी के प्रभाव : आयु- श्रेणी विशिष्ट आयु वर्ग को संदर्भित करता है जैसे कि शिशु, किशोरावस्था, वयस्क आदि। समान आयु-वर्ग से संबंधित लोग, समान जैविक परिवर्तनों के कारण समान अनुभव साझा करते हैं। हालांकि, उनके अनुभव साझा सामाजिक रीति-रिवाजों और मूल्यों जैसे, 5 साल से स्कूल शुरू करने या 18 साल की उम्र में ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करने के कारण समान हो सकते हैं।

इतिहास-वर्गीकृत प्रभाव : आप जिस समय में पैदा हुए हैं, वह आपके अनुभवों को प्रभावित करता है। उदाहरणों में युद्ध, कोई प्राकृतिक आपदा, आर्थिक समृद्धि या अवसाद या कोई तकनीकी विकास (जैसे कंप्यूटर, इंटरनेट या मोबाइल फोन का परिचय) शामिल हैं। इन इतिहास-श्रेणी पैदा हुए लोगों को प्रभावित करती है और इसलिए लगभग एक ही समय अवधि में पैदा हुए कई मायनों में एक जैसे होते हैं।

गैर-मानक प्रभाव: उपरोक्त चर्चा किए गए प्रभाव (आयु-श्रेणीबद्ध और इतिहास-वर्गीकृत) मानक हैं, यानी, बड़ी संख्या में लोगों द्वारा साझा किए जाते हैं। जबकि, कुछ ऐसी घटनाएं होती हैं जो केवल एक व्यक्ति या कुछ लोगों द्वारा अनुभव की जा सकती हैं जैसे कि माता-पिता की मृत्यु, तलाक या किसी बीमारी से प्रभावित होना।

7.8 विकास पर प्रासंगिक प्रभाव

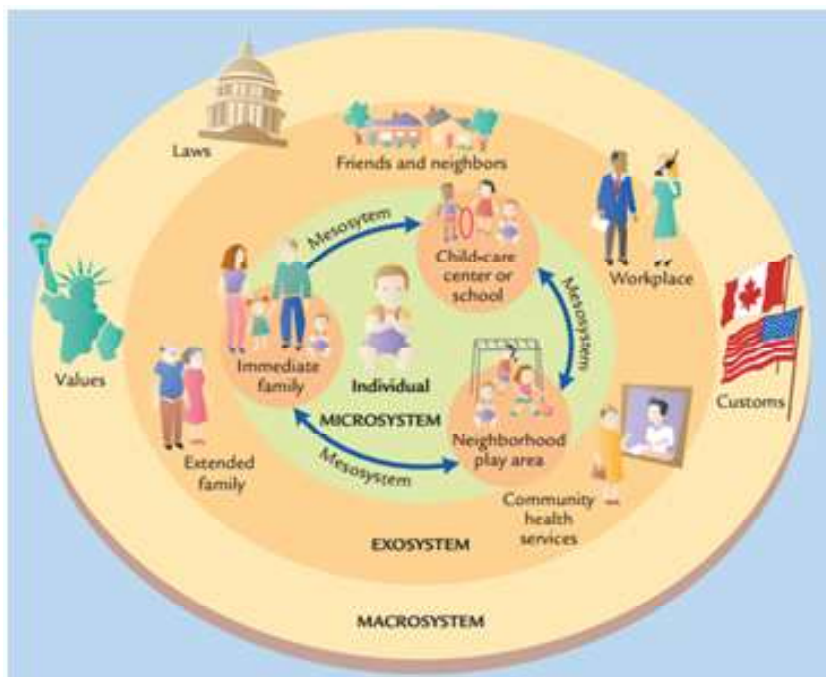
उरी ब्रॉफेनब्रेनर (1979) ने हमारे विकास में संदर्भ की भूमिका को स्पष्ट करने वाले सबसे प्रभावशाली सिद्धांतों में से एक को प्रस्तावित किया है। उनके सिद्धांत को "पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत" के रूप में जाना जाता है। अब हम इस सिद्धांत पर विस्तार से चर्चा करेंगे:

पारिस्थितिक प्रणाली का सिद्धांत

पारिस्थितिक प्रणाली सिद्धांत ने प्रस्तावित किया कि मानव विकास कई सामाजिक-सांस्कृतिक या पर्यावरणीय बलों से प्रभावित होता है। उन्होंने पांच संरचनाओं से युक्त

वातावरण की परिकल्पना की है, जैसे कि माइक्रोसिस्टम, मेसोसिस्टम, एक्सोसिस्टम, मैक्रोसिस्टम और क्रोनोसिस्टम।

मानव विकास की प्रकृति और सिद्धांत



चित्र 7.2 : वातावरण की संरचनापारिस्थितिक प्रणालियों के सिद्धांत में। कृपया ध्यान दें कि यहाँ कालानुक्रम का चित्र नहीं है।

स्रोत : बर्क, एल। ई। (2007)

माइक्रोसिस्टम: यह तात्कालिक पर्यावरणीय संरचना है जहाँ एक व्यक्ति का अपने अन्य महत्वपूर्ण जैसे कि अंश, भाई, शिक्षक और साथियों के साथ सीधा संपर्क होता है। ब्रॉफेनब्रेनर के अनुसार, इस प्रणाली में एक दूसरों के बीच महत्वपूर्ण और व्यक्तिगत संबंध द्विदिश होती है, अर्थात्, यदि माता-पिता किसी बच्चे के व्यवहार पर कोई प्रभाव डाल रहे हैं, तो बच्चे के व्यवहार या विशेषता उसके माता-पिता के व्यवहार को भी प्रभावित करेगी।

मेसोसिस्टम: यह इस मॉडल की दूसरी स्तरीय संरचना है। इस स्तर में माइक्रोसिस्टम के बीच संबंध शामिल हैं। उदाहरण के लिए, एक बच्चे के माता-पिता उसके शिक्षकों हैं या माता-पिता अपने बच्चे के दोस्तों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, यह बातें बच्चे के व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

एक्सोसिस्टम: इसमें वो सामाजिक संदर्भ शामिल हैं जिन पर एक विकासशील व्यक्ति का कोई नियंत्रण नहीं होता है। इस सामाजिक संदर्भ में होने वाली घटनाएं मेसोसिस्टम और विकासशील व्यक्ति के अनुभवों को प्रभावित कर सकती हैं जैसे कि, माता-पिता का स्थानांतरण, कार्य अनुसूची, प्रसूति की उपलब्धता, पितृत्व अवकाश या अस्पताल की उपलब्धता।

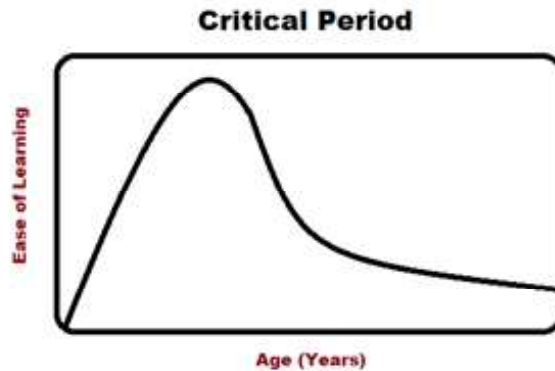
मैक्रोसिस्टम: इसमें सांस्कृतिक मूल्य, सीमा शुल्क और कानून शामिल हैं। यह सबसे बाहरी स्तर है और इसका विशिष्ट संदर्भ नहीं है।

क्रोनोसिस्टम: शब्द 'क्रोनो' समय को संदर्भित करता है। ब्रॉफेनब्रेनर के अनुसार, यह एक अस्थायी स्तर है; यह तेजी से बदलता है और किसी भी सामाजिक-ऐतिहासिक घटनाओं जैसे कि युद्ध या देश की आर्थिक स्थिति को संदर्भित करता है।

इस प्रकार, संक्षेप में, विकास के पारिस्थितिक मॉडल से पता चलता है कि कोई एकल कारक नहीं है जो व्यक्ति के विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है, बल्कि यह

कारकों को परस्पर क्रिया करने का परिणाम है। हाल ही में ब्रॉफेनब्रेनर ने जैव-वैज्ञानिक मॉडल (ब्रॉफेनब्रेनर और इवांस, 2000) के रूप में अपने दृष्टिकोण को चित्रित किया है।

7.9 महत्वपूर्ण अवधि परिकल्पना (क्रिटिकल अवधि परिकल्पना)



चित्र 7.3 : गंभीर अवधि

स्रोत: <https://en.wikipedia.org>

महत्वपूर्ण अवधि परिकल्पना (क्रिटिकल अवधि परिकल्पना) में कहा गया है कि एक जैविक रूप से निर्धारित समय अवधि होती है, जिसके दौरान बच्चे बाहरी उत्तेजनाओं और अन्य समय की तुलना में पर्यावरण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। अधिक विशिष्ट होने के लिए, बच्चों के तंत्रिका तंत्र कुछ पर्यावरणीय उत्तेजनाओं के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं और यदि किसी कारण से बच्चे को महत्वपूर्ण अवधि के दौरान उन उपयुक्त उत्तेजनाओं को प्राप्त नहीं होता है, तो बच्चा उन पर्यावरणीय उत्तेजनाओं को अपने भविष्य में भी संसाधित नहीं कर पाएगा। महत्वपूर्ण अवधि की परिकल्पना केवल मानव तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह पशुओं पर भी समान रूप से लागू है। उदाहरण के लिए, नवजात शिशुओं को जीवन के पहले कुछ दिनों में सामान्य मूछ की सनसनी का अनुभव कर पाते हैं नहीं तो वे चेहरे के क्षेत्र में असामान्य स्पर्श संवेदनशीलता विकसित करेंगे; बिल्लियों को पहले तीन महीनों के दौरान सामान्य दृश्यों की संरचना नहीं मिल पाने से उनकी दृष्टि स्थायी रूप से खराब हो जाती है। और बंदरों को पहले छह महीनों के दौरान लगातार सामाजिक संपर्क की आवश्यकता होती है नहीं तो वे बेहद भावनात्मक रूप से परेशान होंगे। इसी तरह, मनुष्यों में भी यदि बच्चों को सामान्य दृश्य उत्तेजना या भाषा की उत्तेजना या जागने का अवसर नहीं मिलता है, तो बच्चा अन्य मनुष्यों की तरह सामान्य रूप से भाषा को देख या हासिल नहीं कर पाएगा।

क्रिटिकल अवधि के समान एक और शब्द संवेदनशील 'अवधि है जो विस्तारित समय अवधि के रूप में जाना जाता है, जिसके दौरान कुछ सीखना अभी भी संभव हो सकता है। हालांकि, कई मनोवैज्ञानिक दोनों शब्दों को समान मानते हैं।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

बताएं कि क्या निम्नलिखित 'सही' या 'गलत' हैं:

- 1) विकास का पारिस्थितिक मॉडल बताता है कि कोई एकल कारक नहीं है जो व्यक्ति के विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।
- 2) पारिस्थितिक प्रणाली सिद्धांत ने प्रस्तावित किया कि मानव विकास कई सामाजिक-सांस्कृतिक या पर्यावरणीय बलों से प्रभावित होता है।

- 3) मेसोसिस्टम वह तात्कालिक पर्यावरणीय संरचना है जहां एक व्यक्ति का अपने महत्वपूर्ण अन्य लोगों के साथ सीधा संपर्क होता है।
- 4) क्रिटिकल अवधि परिकल्पना कहता है कि एक जैविक रूप से निर्धारित समय अवधि होती है, जिसके दौरान बच्चे बाहरी उत्तेजनाओं और पर्यावरण के प्रति अन्य समय की तुलना में अधिक संवेदनशील होते हैं।
- 5) विकास और दिशाहीन और एकआयामी

7.10 सारांश

इस इकाई में हमने मानव विकास की अवधारणा को सीखा। हमने मानव विकास और जीवन-काल विकास के अर्थ के साथ शुरुआत की, फिर हमने विकास और विकास के बुनियादी मुद्दों को प्रभावित करने वाले कारकों पर चर्चा की। जीवन-अवधि के विकास पर परिप्रेक्ष्य को विकास के पारिस्थितिक आदर्श द्वारा आवरण किया गया। अंत में, हमने इस इकाई में मानव विकास में महत्वपूर्ण अवधि के अर्थ और महत्व का आवरण किया।

7.11 इकाई अभ्यास प्रश्न

- 1) जीवन-काल के विकास से आप क्या समझते हैं? मानव विकास के अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र क्या हैं?
- 2) मानव विकास के किसी भी तीन प्रमुख मुद्दों को लिखें।
- 3) विकास पर जीवन-दृष्टि क्या है?
- 4) उम्र-क्रम, इतिहास-क्रमबद्ध और जीवन-विकास पर गैर-प्रभावकारी प्रभावों के बीच अंतर। अदालत में तलब करना एक उदाहरण।
- 5) विकास का पारिस्थितिक तंत्र मॉडल क्या है?
- 6) एक उपयुक्त उदाहरण के साथ मानव विकास में महत्वपूर्ण अवधि की भूमिका पर एक नोट लिखें।

7.12 शब्दावली

जीवन काल विकास: परिवर्तन का प्रतिरूप जो गर्भाधान से शुरू होता है और जीवन चक्र के माध्यम से जारी रहता है।

बहुआयामी : यह इस तथ्य को संदर्भित करता है कि विकास एक आयाम में नहीं हो सकता, बल्कि यह सभी आयामों (भौतिक, व्यक्तित्व, संज्ञानात्मक और सामाजिक) में विकास का परिणाम होता है।

लचीलापन (प्लास्टिसिटी) : यह अनुकूलन और संशोधित करने की हमारी क्षमता को संदर्भित करता है। इसका मतलब है कि व्यक्ति अपने जीवन काल में कौशल और क्षमता विकसित कर सकता है। प्लास्टिसिटी अलग-अलग हो सकती है।

आयु-श्रेणी के प्रभाव : आयु-ग्रेड विशिष्ट आयु वर्ग को संदर्भित करता है जैसे कि शिशु, किशोरावस्था, वयस्क आदि। समान आयु-वर्ग से संबंधित लोग, समान जैविक परिवर्तनों के कारण समान अनुभव साझा करते हैं।

पारिस्थितिक प्रणाली सिद्धांत : यह प्रस्तावित किया गया था कि मानव विकास कई सामाजिक-सांस्कृतिक या पर्यावरणीय बलों से प्रभावित है। और हमारा पर्यावरण पांच संरचनाओं से मिलकर बना है, जैसे कि माइक्रोसिस्टम, मेसोसिस्टम, एक्सोसिस्टम, मैक्रोसिस्टम और क्रोनोसिस्टम।

क्रिटिकल पीरियड परिकल्पना (CPH) : यह बताता है कि एक जैविक रूप से निर्धारित समय अवधि होती है, जिसके दौरान बच्चे बाहरी उत्तेजनाओं और अन्य समय की तुलना में पर्यावरण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

7.13 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- 1) अंतःस्रावी ग्रंथियाँ
- 2) जीवन काल विकास
- 3) डार्विन और अन्य विकासवादी
- 4) पोषण
- 5) आनुवंशिक लक्षण और पर्यावरणीय परिस्थितियाँ

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- 1) सच
- 2) सच
- 3) झूठा
- 4) सच
- 5) असत्य

7.14 संदर्भ और सुझाव पढ़ना

Baltes, P. B. (1987). Theoretical propositions of life span developmental psychology: On the dynamics between growth and decline. *Developmental Psychology*, 23, 611-626.

Baltes, P. B., Lindenberger, U., & Staudinger, U. M. (2006). Life span theory in developmental psychology. In W. Damon, & R. M. Lerner (Eds.), *Handbook of Child Psychology*, 6th edition (pp. 569-664). Hoboken, NJ: John Wiley & Sons.

Bronfenbrenner, U. (1979). *The Ecology of Human Development: Experiments by Nature and Design*. Cambridge, MA: Harvard University Press.

Boyd, D. and Bee, H. (2006). *Lifespan Development* (4th ed.). Upper Saddle River, NJ: Pearson.

Elizabeth B. Hurlock (1980): *Developmental Psychology: A Life-Span Approach*, Mc Graw Hill company.

Rutter, M. and Rutter, M. (1992). *Developing Minds. Challenge and Continuity Across the Life Span*, London: Penguin.

Smith, M. (2009). *Life Span Development and Lifelong Learning*. WGBH Educational Foundation (2001). *Life Span Development Our Amazing Capacity for Change*.

David R. Shaffer and Katherine Kipp: *Developmental Psychology: Childhood and Adolescence*, Holt, Rurehart and Watson New York.

Elizabeth B. Hurlock(1980) *Developmental Psychology. A Life-Span Approach*, Prentice Hall, New York.

Berk, L. E. (2007). *Development through the lifespan, 4/E. Pearson, Boston, MA, ISBN: 0-205-49125-1, 24, 25.*

John W. Santrock : *Life-Span Development*. Holt Rinehart, New York

छवियों के लिए संदर्भ

Sujit Kumar- The Chicken Boy of Fiji. Retrieved October 23, 2018, from <http://www.technogypsie.com/faerie/?p=2309>

Structure of the environment in ecological systems theory. Retrieved from Berk, L. E. (2007). *Development through the lifespan, 4/E. Pearson, Boston, MA, ISBN: 0-205-49125-1, 24, 25.*

Critical Period. Retrieved October 24, 2018, from https://en.wikipedia.org/wiki/File:Critical_Period.png

इकाई 8 विकास के चरण*

इकाई की रूपरेखा

- 8.0 परिचय
- 8.1 उद्देश्य
- 8.2 विकास के चरण
 - 8.2.1 सिगमंड फ्रायड का सिद्धांत
 - 8.2.2 एरिक एरिकसन का मनोसामाजिक सिद्धांत
- 8.3 सारांश
- 8.4 इकाई अभ्यास प्रश्न
- 8.5 शब्दावली
- 8.6 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर
- 8.7 संदर्भ और सुझाव रीडिंग

8.0 परिचय

मानव बच्चे के गर्भधान से लेकर उसकी मृत्यु तक व्यक्ति लगातार बदलते रहते हैं और विकसित होते रहते हैं। यद्यपि कुछ परिवर्तन मानव द्वारा किए गए हैं, जो संयोग की घटनाओं और व्यक्तिगत विकल्पों के परिणामस्वरूप होते हैं, जीवन के अधिकांश हिस्से मानव परिवर्तन से गुजरते हैं और कुछ सामान्य जैविक और मनोवैज्ञानिक कारकों के कारण आंशिक रूप से विरासत में और आंशिक रूप से पर्यावरणीय होते हैं और सभी लोगों द्वारा साझा किए जाते हैं।

जीवन अवधि विकास सामान्य मानव विकास चरणों से संबंधित है, जिनसे मनुष्य गुजरता है: जन्म, शैशवावस्था, किशोरावस्था, वयस्कता, बुढ़ापा और अंत में मृत्यु। जैसे-जैसे मनुष्य एक चरण से दूसरे चरण तक बढ़ते हैं, वे अपने शरीर के अंगों का उपयोग करना सीखते हैं, खुद को व्यक्त करना सीखते हैं और दूसरों के साथ संवाद करते हैं, दूसरों के साथ संबंध बनाते हैं, दूसरों की देखभाल कैसे करें, कैसे प्यार करें और कैसे काम करें सीखते हैं। इस इकाई में हम मानव के दो प्रमुख सिद्धांतों पर चर्चा करेंगे विकास अर्थात्, सिगमंड फ्रायड के मनोवैज्ञानिक विकास का सिद्धांत और एरिकसन के विकास का सिद्धांत।

8.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न कार्य कर सकेंगे:

- मानव विकास में चरण के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे;
- विकासात्मक प्रक्रिया को समझने में फ्रायड के योगदान को जानेंगे; तथा
- एरिक एरिकसन के विकास प्रक्रिया के सिद्धांत के आठ चरणों को समझ सकेंगे।

8.2 विकास के चरण

मनोवैज्ञानिकों की एक संख्या इस दृष्टिकोण का समर्थन करती है कि मानव विकास चरणों में होता है जो व्यवहार में गुणात्मक अंतर के कारण हो सकता है। पियाजे (Piaget) और

* डॉ. ममता शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला और डॉ. आरती सिंह (इग्नू) (बीपीसी 002, खंड 1 से अनुकूलित कुछ सामग्री)

एरिकसन दो सबसे प्रमुख नाम हैं जिन्होंने मानव विकास के स्टेज मॉडल का समर्थन किया। इस खंड में हम देखेंगे कि इन दोनों सिद्धांतकारों के अनुसार एक व्यक्ति के जीवन में संज्ञानात्मक और मनोवैज्ञानिक विकास कैसे होता है।

8.2.1 सिग्मंड फ्रायड का सिद्धांत

पेशे से चिकित्सक सिग्मंड फ्रायड, मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के प्रमुख योगदानकर्ता थे। उन्होंने रोगियों के साथ नैदानिक अभ्यास करते हुए अपने सिद्धांत को विकसित किया। "अचेतन मानसिक प्रक्रिया" उसके सिद्धांत के लिए केंद्रीय है। यह उन इच्छाओं, आवश्यकताओं और प्रेरणाओं को संदर्भित करता है जिनके लिए हम जागरूक नहीं हैं। इसके अलावा फ्रायड के अनुसार, मानव व्यवहार का गहरा पहलू जैसे कि आक्रामकता और यौन इच्छाएं भी हमारे व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

यह समझने के लिए कि हमारा मानस (मन) कैसे काम करता है, फ्रायड ने प्रस्तावित किया:

- मानस का एक स्थलाकृतिक मॉडल (यह बताता है कि हमारा मन कैसे व्यवस्थित होता है);
- हमारे व्यक्तित्व का एक संरचनात्मक मॉडल ;
- विकास के मनोसामाजिक चरण ।
- मानस का एक स्थलाकृतिक मॉडल

सिग्मंड फ्रायड की दृष्टि में, हमारे मन को तीन स्तरों में विभाजित किया जा सकता है; चेतन, अचेतन और अचेतन।

उनके अनुसार, हमारा चेतन मन वह हिस्सा है जो वर्तमान जानकारी से संबंधित है। अर्थात्, वे सभी विचार, भावनाएँ और कार्य जिनके बारे में आप जानते हैं, वे उसी समय चेतन मन का हिस्सा होते हैं। अचेतन मन उन सभी सूचनाओं से संबंधित है जिनके लिए आप वर्तमान में जागरूक नहीं हैं, लेकिन केवल तभी जान पाते हैं, जब आप ध्यान दें। मन का अंतिम स्तर अचेतन है। मन का यह हिस्सा उन सामाजिक रूप से अस्वीकार्य जरूरतों, इच्छाओं, प्रेरणाओं और भावनाओं को संग्रहीत करता है जिनके लिए आप अनजान हैं। उनके अनुसार, मन का यह अचेतन हिस्सा हमारे कार्यों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

● व्यक्तित्व का एक संरचनात्मक मॉडल

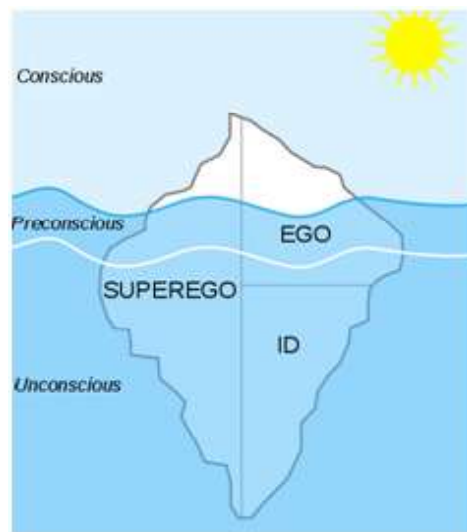
फ्रायड ने प्रस्ताव दिया कि हमारे व्यक्तित्व में तीन तत्व शामिल हैं; इदम्, अहम् तथा पराहम्। विवरणों में व्याख्या करने से पहले, यहां यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि आईडी, अहंकार और सुपररेगो केवल अवधारणाएं हैं और उनका कोई भौतिक या शारीरिक आधार नहीं है।

इदम् (ID) : व्यक्तित्व का यह हिस्सा अनजाने में काम करता है। यह बुनियादी प्रवृत्ति, जैविक जरूरतों और आक्रामक आवेगों से संबंधित है। यह जन्म से ही मौजूद मानव व्यक्तित्व का सबसे प्रमुख हिस्सा है। ID से व्यक्तित्व के अन्य हिस्सों (अहम् तथा पराहम्) का विकास होता है। यह दर्द से बचने और आनंद लेने के लिए आनंद सिद्धांत-प्रवृत्ति पर काम करता है। आईडी का उद्देश्य समाज और व्यक्ति के नैतिक मूल्यों पर विचार किए बिना तुरंत किसी भी आवश्यकता को पूरा करना है (यह पूर्णतः अचेतन में काम करता है)। इरोस और थानाटोस (Eros तथा Thanatos) इदम् की दो ड्राइंग बल हैं। ग्रीक पौराणिक कथाओं में इरोस प्रेम के देवता थे। फ्रायड के अनुसार, आईडी (ईड)के संदर्भ में, इरोस जीवन शक्ति है। यह हमारे जीवन वृत्ति और अस्तित्व के लिए जिम्मेदार है, जिसमें यौन इच्छा, प्रजनन इच्छा और दर्द से बचाव शामिल है। इरोस का समकक्ष थानाटोस है—मृत्यु बल या वृत्ति।

यह हिंसा, आक्रामकता और नकारात्मक भावनाओं की तरह नफरत के लिए जिम्मेदार है। थानाटोस का उद्देश्य हमें मौत और विनाश की ओर प्रेरित कर इरोस के प्रति खिंचाव को संतुलित करना है। जब व्यक्तित्व में इदम् का वर्चस्व होता है, तो व्यक्ति अधिक आवेगपूर्ण हो जाता है, ऐसे लोग वही करेंगे जैसे एक बच्चा करना चाहता है।

अहम् (Ego) : मान लीजिए कि 10 साल का बच्चा फ्रिज में रखे आइसक्रीम का स्कूप खाना चाहता है। लेकिन वह जानता है कि माता-पिता से अनुमति लिए बिना आइसक्रीम खाने पर दंडित किया जाएगा। इस वास्तविकता की जांच के लिए जिम्मेदार व्यक्तित्व के हिस्से को एगो के नाम से जाना जाता है। इसलिए, अहंकार वास्तविकता सिद्धांत-देरी आईडी की संतुष्टि की आवश्यकता पर काम करता है जब तक कि एक उपयुक्त और अधिक यथार्थवादी स्थिति नहीं मिलती है। व्यक्तित्व का यह भाग आईडी से निकलता है और इसका मुख्य उद्देश्य आईडी की आवेगी आवश्यकताओं और इस दुनिया की वास्तविकता के बीच संतुलन बनाना है। यह हमारे मानस का निर्णय लेने वाला घटक है और केवल तर्क पर काम करता है। फ्रायड के शब्दों में, "अहंकार उस आईडी का हिस्सा है जिसे बाहरी दुनिया के प्रत्यक्ष प्रभाव द्वारा संशोधित किया गया है" (फ्रायड, 1923)। यदि अहंकार इस दुनिया की आईडी और यथार्थवादी मांगों की आवेगी मांगों के बीच संघर्ष को हल करने में सक्षम नहीं होगा, तो यह चिंता और तनाव के विकास को जन्म देगा। इस चिंता को दूर करने के लिए, व्यक्ति को बेहोश रक्षा तंत्र का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जाएगा (हम बाद के खंड में इस बारे में बात करेंगे)।

पराहम् (Super Ego): यह हमारे व्यक्तित्व का नैतिक गुरु है। आइए हम पिछले अनुभाग में संदर्भित समान उदाहरण जारी रखें। 10 साल का बच्चा अपने माता-पिता से अनुमति मांगेगा या नहीं, इसके लिए आइसक्रीम का एक स्कूप खाना उसके पराहम् के विकास पर निर्भर करता है। चूंकि, अनुमति लेना नैतिक रूप से सही व्यवहार है; यह बच्चे में पराहम् की उपस्थिति का संकेत देगा। पराहम् की भूमिका समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से समाज के नैतिक और नैतिक मूल्य को आंतरिक बनाना है। यह इड के आवेगी आग्रह को नियंत्रित करता है और केवल यथार्थवादी व्यवहार के बजाय नैतिक रूप से उचित व्यवहार का चयन करने के लिए अहम् को नियमित करता है। हमारे मानस का यह हिस्सा तीन से पांच साल की उम्र के बीच विकसित होता है। इसके अलावा, फ्रायड के अनुसार, हमारे सुपरइडो में दो प्रणालियाँ शामिल हैं: (i) अंतरात्मा और (ii) आदर्श स्व। अंतरात्मा की भूमिका अहम् को दंडित करने या उसके व्यवहार के आधार पर, गर्व या अपराध की भावना



चित्र 8.1 फ्रायड के मानस सिद्धांत का आरेख

के माध्यम से पुरस्कृत करने के लिए है। उदाहरण के लिए, यदि अहम्, इदम की मान लेता है और नैतिक आचार संहिता को तोड़ता है, तो सुपरइगो आपको अपने व्यवहार के बारे में दोषी महसूस कराएगा। दूसरी प्रणाली, आपके स्वयं के आदर्श स्वयं-आदर्शित चित्र, आपके व्यवहार के आधार पर, आपको दोषी या गौरव महसूस कराने का काम भी करते हैं।

अहम्/अहंकार रक्षा तंत्र

अहंकार की एक भूमिका व्यक्ति को चिंता और तनाव से बचाना है। इसलिए जब निशिद्ध इच्छाओं और उद्देश्यों से चिंता और तनाव बढ़ जाता है, तो हम कुछ मनोवैज्ञानिक रणनीतियों का उपयोग करते हैं, जिन्हें अहंकार रक्षा तंत्र के रूप में जाना जाता है। फ्रायड के अनुसार, इन अहं रक्षा तंत्रों को नियोजित करने का एकमात्र उद्देश्य हमारे मानस को चिंता से बचाना है। आठ महत्वपूर्ण रक्षा तंत्रों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है:

तालिका 1 : इगो-रक्षा तंत्रों का सारांश

तंत्र	विवरण
दमन (Repression)	आवेगों या यादों को छोड़कर जो बहुत भयावह या दर्दनाक हैं को सचेत जागरुकता/चेतन से हटाना।
युक्तिकरण (Rationalization)	हम जो करते हैं उसे तार्किक या सामाजिक रूप से वांछनीय उद्देश्यों का बताते हुए कि तर्कसंगत रूप से कार्य करना।
प्रतिक्रिया का गठन (Reaction formation)	विपरीत मकसद के लिए मजबूत अभिव्यक्ति देकर खुद से एक मकसद का पता लगाना।
प्रक्षेपण (Projection)	अतिरंजित मात्रा में अपने स्वयं के अवांछनीय गुणों को दूसरों को सौंपना
इन्टेलेक्चुअलाइजेशन (Intellectualization)	तनाव से निपटने के लिए अमूर्त और बौद्धिक शब्दों का प्रयोग करना
इनकार (Denial)	अप्रिय वास्तविकता मौजूद होते हुए भी इनकार करना।
विस्थापन (Displacement)	एक ऐसे मकसद को निर्देशित करना जिसमें संतुष्टि नहीं हो सकती एक रूप दूसरे चैनल में।

स्रोत : एटकिंसन एंड हिलगार्ड (2009), पीपी 469

● फ्रायड के मनोवैज्ञानिक विकास के चरण

फ्रायड ने व्यक्तित्व के विकास के पाँच चरण के मॉडल का प्रस्ताव रखा। उनके अनुसार, किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के मुख्य पहलू पांच साल की उम्र तक विकसित होते हैं और पूरे समय तक अपरिवर्तित रहते हैं। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि एक चरण से दूसरे चरण में जाने के लिए, एक बच्चे को प्रत्येक चरण के संघर्षों को सफलतापूर्वक हल करने की आवश्यकता होती है। यदि, प्रारंभिक मोड़ में संतोष प्राप्त नहीं होगा तो उस चरण का असंतोष पूरे जीवनकाल तक रहेगा। (द कैम्ब्रिज डिक्शनरी ऑफ साइकोलॉजी, 2009)। उदाहरण के लिए, मौखिक चरण में असंतुष्ट व्यक्ति को पीने या धूम्रपान करने की आदत हो सकती है। निम्नलिखित अनुभाग में, हम संक्षेप में मनोवैज्ञानिक विकास के पाँच चरणों के बारे में बात करेंगे:

स्टेज I: ओरल स्टेज (जन्म से 18 महीने)

इस अवस्था के दौरान मुंह सुख का स्रोत है। बच्चे पूरी तरह से अपनी देखभाल करने वालों पर निर्भर रहते हैं, खासकर माँ। वे सुख से प्रेरित होते हैं और चूसने और निगलने के माध्यम से उनके आसपास की दुनिया को समझते हैं। अधिक संतुष्टि या संतुष्टि के तहत इस प्रारंभिक मौखिक चरण में निर्धारण हो सकता है जिसके परिणामस्वरूप वयस्कता में अधिक खाने के व्यवहार, पीने या धूम्रपान का विकास हो सकता है। फ्रायड ने इन लोगों को मौखिक-निगमन या मौखिक-निगलना कहा। बाद में इस अवस्था के दौरान, बच्चे चबाने और काटने से आनंद का अनुभव करते हैं। इस चरण के मनोवैज्ञानिक संघर्ष को हल करने में असमर्थ वयस्कता में नाखून काटने और वस्तु चबाने की आदत विकसित हो सकती है। फ्रायड ने आगे बताया कि ये लोग स्वभाव से अधिक आलोचनात्मक और व्यंग्यात्मक होते हैं। उन्होंने ऐसे लोगों को मौखिक-आक्रामक या मौखिक-दुखवादी कहा।

स्टेज II: गुदा स्टेज (अनल) (18 महीने से तीन वर्ष)

इस अवस्था के दौरान, बच्चे पहली बार अपने समाज की मांग का सामना करते हैं; मूत्र और मल के निष्कासन को नियंत्रित करने और देरी से करने के लिए। बच्चे अपने आंत्र और मूत्राशय के आंदोलन से इस अवस्था में आनंद का अनुभव करते हैं। फ्रायड का मानना था कि बहुत कठोर या बहुत कम शौचालय प्रशिक्षण इस स्तर पर निर्धारण का कारण हो सकता है। या तो गन्दा, कम आत्म-नियंत्रण लेकिन उदार (फ्रायड द्वारा गुदा निष्कासित पात्रों के रूप में कहा जाता है) में परिणामी या स्पष्ट, क्रमबद्ध लेकिन माध्य (फ्रायड द्वारा गुदा प्रतिशोधी पात्रों के रूप में कहा जाता है)।

चरण III: फालिक अवस्था (तीन से पांच वर्ष)

इस अवस्था के दौरान जननांग इरोजेनस क्षेत्र बन जाते हैं। बच्चे जानबूझकर या अनजाने में खुशी के लिए अपने जननांगों को छूते हैं। इस चरण के दौरान, वे पुरुषों और महिलाओं के बीच के अंतर को समझते हैं। फ्रायड ने प्रस्तावित किया कि पुरुष बच्चे को ओडिपस जटिल (oedipus complex) अनुभव होता है-जिसमें उसकी माँ के प्रति यौन भावना, पिता के लिए प्रतिद्वंद्विता की भावना, साथ ही पिता द्वारा मां की इच्छा रखने के लिए दंडित होने का खतरा शामिल है। ओडिपस कॉम्प्लेक्स (oedipus complex) का प्रतिरूप महिला बच्चे द्वारा इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स (electra complex) अनुभव है। इसमें पिता के लिए यौन आकर्षण, माँ के लिए प्रतिद्वंद्विता की भावना और पिता के प्रति इस भावना को रखने के लिए मां द्वारा दंडित होने का खतरा शामिल है। इस परिसर का सफल संकल्प परिपक्व यौन पहचान विकसित करता है। फ्रायड के अनुसार, इस चरण के अंत तक व्यक्तित्व पूरी तरह से बन जाता है।

चरण IV: विलंबता अवस्था (छह से बारह वर्ष)

इस चरण के दौरान यौन ऊर्जा शैक्षिक, खेल और सामाजिक गतिविधियों की ओर ले जाती है। इस चरण में विपरीत लिंग के लिए कम रुचि होती है।

स्टेज V: जननांग स्टेज (वयस्क होने में तेरह वर्ष)

इस अवस्था में यौन ऊर्जा फिर से लौट आती है। पिछले चरणों के सफल समापन से विपरीत लिंग के साथ एक परिपक्व अंतरंग संबंध विकसित करने में मदद मिलती है। जबकि, पिछले मनोवैज्ञानिक चरणों के अनसुलझे मुद्दे वयस्कता के दौरान प्रदर्शित होने लगेंगे; विपरीत लिंग के साथ स्वस्थ अंतरंग संबंध स्थापित करने के लिए अग्रणी होते हैं।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

बताएं कि क्या निम्नलिखित 'सही' या 'गलत' हैं:

- 1) मुंह चरणीय अवस्था के दौरान खुशी का स्रोत है।
- 2) फ्रायड ने व्यक्तित्व के विकास के पांच चरण के मॉडल का प्रस्ताव रखा।
- 3) व्यक्ति को चिंता और तनाव से बचने में अहंकार की कोई भूमिका नहीं है।
- 4) अहंकार वास्तविकता सिद्धांत-देरी आईडी की संतुष्टि की आवश्यकता पर काम करता है जब तक एक उपयुक्त और अधिक यथार्थवादी स्थिति नहीं मिलती है तब तक देरी हो जाएगी।
- 5) सिगमंड फ्रायड की दृष्टि में, हमारे मन को तीन स्तरों में विभाजित किया जा सकता है; चेतन, अचेतन और अचेतना।

8.2.2 एरिक एरिकसन का मनोसामाजिक सिद्धांत

एरिकसन फ्रायड की तरह एक मनोविश्लेषक थे, लेकिन उनके साइको यौन विकास के संबंध में फ्रायड से अलग विचार थे। इसका अर्थ है कि वह फ्रायड के विचारों को मूल रूप से नहीं मानते थे। एरिकसन, फ्रायड की तुलना में बहुत अधिक संस्कृति-उन्मुख थे और उनके सिद्धांत को साइकोसेक्सुअल के बजाय साइकोसोशल कहा जाता है।

एपिजेनेटिक सिद्धांत (Epigenetic Principle)

एपिजेनेटिक सिद्धांत द्वारा विकास कार्य जिसका अर्थ है कि हमारा व्यक्तित्व एक पूर्व निर्धारित क्रम के माध्यम से विकसित होता है अर्थात्, केवल एक के बाद एक चरण। अपने सिद्धांत में उन्होंने प्रस्ताव दिया कि व्यक्तित्व का यह खुलासा आठ चरणों में होता है। प्रत्येक चरण के माध्यम से हमारी प्रगति पिछले सभी चरणों में, हमारी सफलता या असफलता की कमी से निर्धारित होती है।

मनोसामाजिक गुण या ताकत (सकारात्मक परिणाम)

प्रत्येक चरण में कुछ विकासात्मक कार्य शामिल हैं जो प्रकृति में मनोसामाजिक हैं और जिनकी एक निश्चित इष्टतम समय भी है। यदि एक मंच का प्रबंधन अच्छी तरह से किया जाता है, तो हम अपने साथ कुछ खास गुण या मनोदैहिक शक्ति लेकर चलते हैं, जो हमारे जीवन के बाकी चरणों में हमारी मदद करते हैं।

मनोसामाजिक विकृति और दुर्भावना (नकारात्मक परिणाम)

यदि कोई बच्चा विभिन्न चरणों और विकास के माध्यम से सफल होने में सक्षम है, तो एक सकारात्मक स्वस्थ व्यक्ति की उम्मीद कर सकता है। हालांकि यदि व्यक्ति सफलता की तुलना में अधिक विफलता का सामना करता है, तो उसका व्यक्तित्व अस्वस्थ होगा। 'विकृति' 'और' 'दुर्भावना' 'संकट के चरणों में से प्रत्येक के माध्यम से एक अनपेक्षित अनुभव से उत्पन्न होने वाले नकारात्मक परिणामों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि हम कार्य को अच्छी तरह से प्रबंधित नहीं करते हैं, तो हम विकृतियों और दुर्भावनाओं का विकास कर सकते हैं, जो हमारे भविष्य के सभी विकास को खतरे में डाल देगा। एक दुर्भावना में सकारात्मक बहुत कम शामिल होता है और सबसे अधिक शामिल होता है नकारात्मक पहलू जैसे कि एक व्यक्ति जो कुरूपता में बिल्कुल भरोसा नहीं करता है उसमें अधिक सकारात्मक और बहुत कम नकारात्मक शामिल होता है।

● विकास के आठ चरण

एरिक एरिकसन ने विकास के आठ चरणों के बारे में बताया जिसके माध्यम से एक स्वस्थ विकासशील व्यक्ति गुजरता है। ये हैं:

1) विश्वास बनाम अविश्वास (शिशु, 0 से 1 वर्ष)

इस अवस्था में, देखभाल करने वाले की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। यदि प्राथमिक देखभाल करने वाले द्वारा बच्चे को प्रदान किया जाने वाला व्यवहार और देखभाल सुसंगत, अनुमानित और विश्वसनीय है तो बच्चे में विश्वास की भावना विकसित होगी। विश्वास की इस भावना को जीवन भर बच्चे द्वारा निभाया जाएगा और उसे इस दुनिया को सुरक्षित स्थान और अन्य लोगों के भरोसेमंद होने का एहसास दिलाएगा जो उसकी मदद करने के लिए हमेशा मौजूद रहेंगे। दूसरी ओर, सुरक्षित वातावरण और निरंतर प्रेम प्रदान करने में माता-पिता या प्राथमिक देखभाल करने वाले की अक्षमता तब अविश्वास का कारण बनेगी। एरिकसन के अनुसार, इस चरण के सफल समापन से बढ़ते बच्चे में आशा का गुण विकसित होगा।

2) स्वायत्तता बनाम शर्म और संदेह (टॉडलर्स, 2 से 3 वर्ष)

दूसरा चरण प्रारंभिक बचपन का गुदा-पेशी चरण है। यह "पकड़ और जाने दो" की एक महत्वपूर्ण अवधि है। जैसे-जैसे बच्चे उन्मूलन कार्यों और मोटर क्षमताओं पर नियंत्रण हासिल करते हैं, वे अपने परिवेश का पता लगाने लगते हैं। यदि माता-पिता और देखभाल करने वाले आत्मनिर्भर व्यवहार को प्रोत्साहित करते हैं, तो टॉडलर्स स्वायत्तता की भावना विकसित करते हैं जो कि कई समस्याओं को अपने आप से निपटने में सक्षम होने की भावना प्रदान करता है। लेकिन अगर देखभाल करने वाले बच्चों से बहुत अधिक माँग करते हैं, और बच्चों को उन कार्यों को करने से मना कर दें जिनमें वे सक्षम हैं, बच्चों को शर्म की बात हो सकती है और समस्याओं को संभालने की उनकी क्षमता पर संदेह हो सकता है। यदि एक बच्चे को स्वायत्तता का उचित, सकारात्मक संतुलन मिल जाता है, तो व्यक्ति में इच्छाशक्ति का गुण विकसित हो जाएगा, या फिर, आवेग की दुर्भावनापूर्ण प्रवृत्ति और मजबूरी की घातक प्रवृत्ति विकसित हो जाएगी। इस चरण में सफलता से इच्छाशक्ति का गुण पैदा होगा।

3) पहल बनाम अपराधबोध (पूर्वस्कूली, (Preschool) 4 से 6 वर्ष)

इस अवस्था के दौरान एक बच्चा अपनी मुखर क्षमताओं को छोड़ना शुरू कर देता है। वह पहल करना सीखता है- "दुनिया की चुनौतियों के प्रति एक सकारात्मक प्रतिक्रिया, जिम्मेदारियों को लेना, उद्देश्यपूर्ण महसूस करना और नए कौशल सीखना" (टंडन, 2002)। प्ले (खेलना) इस अवस्था में केंद्रीय है। यह एक बच्चे को पहल करने और उसके आसपास के वातावरण पर नियंत्रण रखने का मौका देता है। यदि माता-पिता बच्चों की गतिविधियों और कल्पना को प्रोत्साहित और समर्थन करते हैं, तो यह बच्चे को उसकी क्षमताओं के बारे में आश्वस्त करेगा। इससे बच्चे को भविष्य में दूसरों का नेतृत्व करने और स्वयं निर्णय लेने में मदद मिलेगी। दूसरी ओर, यदि माता-पिता द्वारा बच्चे की पहल की आलोचना और नियंत्रण किया जाता है तो इससे अपराध की भावना का विकास होगा। इस चरण में सफलता के उद्देश्य का पुण्य होगा।

4) उद्योग बनाम हीनता (बचपन, 7 से 12 वर्ष)

इस स्तर पर, बच्चा विभिन्न कौशल विकसित करना सीखता है जैसे कि, पढ़ना, लिखना, गणित करना आदि। सहकर्मी समूह और शिक्षक इस अवस्था के दौरान

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि बच्चे की पहल को स्वीकार किया जाता है, प्रोत्साहित किया जाता है और उसे मजबूत किया जाता है तो वह सक्षम और आत्मविश्वासी महसूस करेगा यानी मेहनती। हालांकि, दूसरी ओर, यदि बच्चे की लगातार आलोचना की जाती है और उसकी पहल का उपहास किया जाता है, तो यह उसे उसकी क्षमताओं से हीन महसूस कराएगा। उद्योग और हीनता के सही संतुलन से योग्यता नामक गुण विकसित होगा। यदि बच्चा असफलता का अनुभव करता है तो वह संकीर्ण सद्गुणों की विकृत प्रवृत्ति और जड़ता की घातक प्रवृत्ति विकसित कर सकता है।

5) **पहचान बनाम भूमिका भ्रम (किशोरों, 13 से 19 वर्ष)**

पांचवें चरण की पहचान बनाम भूमिका भ्रम है, और यह किशोरावस्था के दौरान, लगभग 12-18 वर्षों तक होता है। "यह बचपन और परिपक्वता के बीच का चौराहा है" (शफ़र एंड किप, 2010)। इस चरण का लक्ष्य सामाजिक पहचान और व्यावसायिक पहचान विकसित करना है। इस चरण के दौरान बच्चे अधिक स्वतंत्र हो जाते हैं और अपनी सामाजिक और व्यावसायिक पहचान को विकसित करके समाज का हिस्सा बनने का प्रयास करते हैं। यदि समाज स्पष्ट दिशानिर्देश और पारित होने के संस्कार प्रदान करता है तो यह किशोरों को स्पष्ट भूमिका पहचान प्राप्त करने में मदद करेगा। यदि इस चरण में बातचीत करने में विफल रहे, तो व्यक्ति कट्टरता की घातक प्रवृत्ति और दमन की घातक प्रवृत्ति विकसित कर सकता है। इसके अलावा, इस चरण में सफलता से निष्ठा का गुण पैदा होगा।

6) **अंतरंगता बनाम अलगाव (युवा वयस्क, 20 से 34 वर्ष)**

यह अवस्था युवा वयस्कता में होती है, यानी 18 साल से 40 साल के बीच। इस चरण में, व्यक्ति मजबूत दोस्ती स्थापित करने और अन्य व्यक्तियों के साथ अंतरंग संबंध बनाने की कोशिश करता है। किसी अन्य व्यक्ति के साथ अंतरंग संबंध विकसित करने में विफलता के कारण अकेलापन, अलगाव, सामाजिक वापसी और दुर्भावनापूर्ण व्यवहार हो सकता है। इस चरण में सफलता से प्यार का गुण विकसित होगा।

7) **उदारता बनाम ठहराव (मध्य वयस्कता, 35 से 65 वर्ष)**

उदारता बनाम ठहराव एरिकसन के सिद्धांत का सातवां चरण है। यह अवस्था मध्य वयस्कता के दौरान होती है अर्थात् 35 वर्ष से 65 वर्ष तक। इस चरण का स्वस्थ उद्देश्य भविष्य की पीढ़ी के लिए प्यार और देखभाल का विस्तार विकसित करना है। इस अवस्था के दौरान एक व्यक्ति परिवार और बच्चों की परवरिश करके और अपनी जरूरतों और आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होकर काम के लिए और अपने समाज के लिए उत्पादक बनने की कोशिश करता है। उदारता के इन मानकों को एक की संस्कृति द्वारा परिभाषित और आकार दिया जाता है। दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति उत्पादक होने में असमर्थ है, तो काम और समाज, द्वारा अस्थिरता और आत्म-भोग को प्राप्त करता है। इस चरण में सफलता से देखभाल का गुण विकसित होगा।

8) **अहंकार अखंडता बनाम निराशा (वरिष्ठ, 65 वर्ष बाद)**

यह अंतिम चरण है और एरिकसन के अनुसार यह समीक्षा का एक चरण है जिसमें वृद्ध वयस्क जीवन को देखता है और उसकी पूरी समीक्षा करता है। यदि वृद्ध वयस्क अपने जीवन को सार्थक और सुखद अनुभव से युक्त मानते हैं तो इससे अखंडता को बढ़ावा मिलेगा, स्वयं और दुनिया के साथ शांति महसूस होगी। जबकि, दूसरी ओर

अगर वृद्ध वयस्क अपने जीवन को निराशाओं से भरा, अस्पष्ट लक्ष्यों और नकारात्मक अनुभवों से भरा हुआ महसूस करता है तो इससे निराशा पैदा होगी जिससे अवसाद और निराशा की भावना पैदा होगी। इस चरण में सफलता से ज्ञान का गुण विकसित होगा।

तालिका 8.2: एरिकसन के मनोसामाजिक सिद्धांत का चरणवार सारांश

चरण (आयु)	मनोसामाजिक संकट	महत्वपूर्ण रिश्ते	मनोसामाजिक तौर-तरीकों	मनोसामाजिक गुण	विकृति और अशिष्टता
I (0-1) –शिशु	ट्रस्ट बनाम अविश्वास	मां	पाना, बदले में, वापस देना	विश्वास आशा	ग्रहणशीलविरूपण –वापसी
II (2-3) – टॉडलर्स	स्वायत्तता बनाम शर्म और संदेह करना	माता-पिता	पकड़े रहना, जाने देना	जीं, दृढ़ निश्चय	आवेग –विवशता
III (3-6) – पूर्वस्कूली	पहल बनाम अपराधबोध	परिवार	किसी के पीछे जाना, खेलना	उद्देश्य,साहस	निर्दयता –निषेध
IV (7-12) बचपन	उद्योग बनाम हीनता	पड़ोस-पड़ोस और स्कूल	पूरा करना, चीजों को जोड़ना	क्षमता	संकीर्ण सदाचार जड़ता
V (12-18) – किशोरों,	पहचान बनाम भूमिका भ्रम	मित्र मंडली, रोल मॉडल्स	स्व होना, अपने आप को साझा करना	सत्य के प्रति निष्ठा,निष्ठा	कट्टरता –परित्याग
VI (20 से 34 वर्ष) –युवा वयस्क	अंतरंगता बनाम अलगाव	भागीदारों,दोस्त	स्वयू को दूसरे में ढूँढना	मोहब्बत	अनुनय –विशिष्टता
VII (35 से 65 वर्ष) –मध्य वयस्कता	उत्पत्ति बनाम ठहराव	घरेलू काम करनेवालों	देखभाल	बनाने के लिए,देखभाल करने के लिएका	अधिकता –अस्वीकार
VIII(65 वर्ष बाद) –वरिष्ठ	अहंकार अखंडता बनाम निराशा	मानव जाति या “मेरे प्रकार”	होना, गुजरना असितवत् महसूस न होना	बुद्धिमत्ता	अनुमान –निराशा

(स्रोत: चार्ट एरिकसन की 1959 की पहचान और जीवन चक्र से अनुकूलित: मनोवैज्ञानिक मुद्दे खंड 1, # 1)

8.3 सारांश

हमने इस इकाई को विकास के स्टेज मॉडल की अवधारणा के साथ शुरू किया। स्टेज मॉडल को और अधिक गहराई से समझने के लिए, हमने सिग्मंड फ्रायड के सिद्धांत और एरिक एरिकसन के विकास के सिद्धांत को दो सिद्धांतों को शामिल किया। फ्रायड के

सिद्धांत के अनुसार हमारा विकास पाँच चरणों में होता है जबकि एरिक एरिकसन के अनुसार हमारी विकास प्रक्रिया में आठ चरण होते हैं।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

खाली जगह भरें:

- 1) स्टेज में, देखभाल करने वाले की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है।
- 2) समीक्षा का एक चरण है जिसमें वृद्ध वयस्क किसी के जीवन को देखता है और उसकी पूरी समीक्षा करता है।
- 3) सिद्धांत का अर्थ है कि हमारा व्यक्तित्व एक पूर्वनिर्धारित क्रम के माध्यम से विकसित होता है यानी केवल एक के बाद एक चरण।
- 4) यदि हम कार्य को अच्छी तरह से प्रबंधित नहीं करते हैं, तो हम और विकसित कर सकते हैं।
- 5) प्रत्येक चरण में कुछ कार्य शामिल होते हैं जो प्रकृति में मनोसामाजिक होते हैं।

8.4 इकाई अभ्यास प्रश्न

- 1) आप विकास के चरणों का क्या समझते हैं? मंच सिद्धांतकारों की मूल धारणा क्या है?
- 2) फ्रायड के सिद्धांत के मनो-यौन चरणों को समझाइए।
- 3) एरिकसन के सिद्धांत का स्वदेशी सिद्धांत क्या है? अपनी पसंद के किसी भी पाँच चरण को उसके सिद्धांत से लिखें।

8.5 शब्दावली

- इदम (Id)** : व्यक्तित्व का वह हिस्सा जो अनजाने में संचालित होता है। यह बुनियादी प्रवृत्ति, जैविक जरूरतों और आक्रामक आवेगों से संबंधित है।
- खुशी का सिद्धांत** : दर्द से बचने और आनंद लेने की प्रवृत्ति।
- प्रक्षेपण** : अतिरंजित मात्रा में दूसरों के लिए हमारे अपने अवांछनीय गुणों को सौंपना।
- ओडिपस कॉम्प्लेक्स** : इसमें अपनी मां के प्रति पुरुष बच्चे की यौन भावना, पिता के लिए प्रतिद्वंद्विता की भावना के साथ-साथ पिता द्वारा मां की इच्छा रखने पर सजा पाने की धमकी शामिल है।
- इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स** : यह ओडिपस कॉम्प्लेक्स का प्रतिरूप है। इसका अनुभव महिला बच्चे द्वारा किया जाता है। इसमें पिता के लिए यौन आकर्षण, मां के लिए प्रतिद्वंद्विता की भावना और

पिता के प्रति इस भावना को रखने के लिए मां द्वारा दंडित होने का खतरा शामिल है।

एपिजेनेटिक सिद्धांत : यह सिद्धांत बताता है कि हमारा व्यक्तित्व एक पूर्व निर्धारित क्रम के माध्यम से विकसित होता है, अर्थात्, केवल एक के बाद एक चरण।

8.6 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- 1) गलत
- 2) सही
- 3) गलत
- 4) सही
- 5) सही

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- 1) अहंकार अखंडता बनाम निराशा
- 2) ट्रस्ट बनाम अविश्वास
- 3) एपिजेनेटिक
- 4) कुरूपता और दुर्भावनाएँ
- 5) विकासात्मक

8.7 संदर्भ और सुझाव रीडिंग

Bjorklund D. (1997). In search of a meta-theory for cognitive development. *Child Development* 68(1), 144–148.

Dixon R.A. and Lerner R.M. (1999). History and systems in developmental psychology. *Developmental Psychology: An Advanced Textbook* (ed. M.H. Bornstein and M.E. Lamb), 4th edn., pp. 1–46. Mahwah, N.J.: Lawrence Erlbaum.

Geary D.C. and Bjorklund D.F. (2000). Evolutionary developmental psychology. *Child Development* 71(1), 57–65.

Lerner R.M. (1998). Theories of human development: contemporary perspectives. *Handbook of Child Psychology. Vol. 1. Theoretical Models of Human Development* (ed. R.M. Lerner), 5th edn., pp. 1–24. New York: Wiley.

Lerner R.M., Fisher C.B., and Weinberg R.A. (2000). Toward a science for and of the people: promoting civil society through the application of developmental science. *Child Development* 71(1) 11–20.

Lewis M.D. (2000). The promise of dynamic systems approaches for an integrated account of human development. *Child Development* 71(1), 36–43.

Nelson C.A. and Bloom F.E. (1997). *Child Development and Neuroscience*. *Child Development* 68(5), 970–987.

Pellegrini A.D. and Bjorklund D.F. (1998). *Applied Child Study: A Developmental Approach*, 3rd edn., 243 pp. Mahwah, N.J.: Lawrence Erlbaum.

विकास के चरण

Tandon, R. K. (2002). *Child Psychology*. APH Publishing Corporation.

छवियों के लिए संदर्भ

Diagram of Freud's psyche theory. Retrieved October 31, 2018, from <https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Structural-Iceberg.svg>



इकाई 9 संज्ञानात्मक और नैतिक विकास*

इकाई की रूपरेखा

- 9.0 परिचय
- 9.1 उद्देश्य
- 9.2 संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत
 - 9.2.1 जीन पियाजे (Jean Piaget's) थ्योरी
 - 9.2.2 वायगोत्स्की (Vygotsky's) की थ्योरी
- 9.3 नैतिक विकास: कोहलबर्ग का सिद्धांत
- 9.4 सारांश
- 9.5 इकाई अभ्यास प्रश्न
- 9.6 शब्दावली
- 9.7 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर
- 9.8 संदर्भ और सुझाव पठन

9.0 परिचय

आम आदमी की भाषा में, संज्ञान दुनिया के बारे में आपके ज्ञान को संदर्भित करता है। जबकि, संज्ञानात्मक प्रक्रिया, वे मानसिक प्रक्रियाएँ हैं जिनके माध्यम से हम अपने आसपास की दुनिया के बारे में जानकारी हासिल करते हैं। इस प्रकार, संज्ञानात्मक विकास सूचना प्रसंस्करण, वैचारिक संसाधनों, अवधारणात्मक कौशल, भाषा सीखने आदि के संदर्भ में एक बच्चे के विकास को संदर्भित करता है। यह इकाई संज्ञानात्मक विकास के दो प्रमुख सिद्धांतों से संबंधित है, अर्थात्, पियागेट का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत और संज्ञानात्मक विकास का व्यगोत्स्की सिद्धांत। फिर, यूनिट भी नैतिक विकास के कोहलबर्ग के सिद्धांत की मदद से नैतिक विकास पर चर्चा करती है।

9.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न कार्य कर सकेंगे:

- संज्ञानात्मक विकास की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे;
- जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत का वर्णन कर सकेंगे;
- संज्ञानात्मक विकास में वायगोत्स्की के योगदान को स्पष्ट कर सकेंगे; तथा
- कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत को स्पष्ट कर सकेंगे कर सकेंगे।

9.2 संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत

9.2.1 जीन पियागेट (Jean Piaget's) की थ्योरी

पियागेट का चरण सिद्धांत बच्चों में संज्ञानात्मक विकास का वर्णन करता है। संज्ञानात्मक विकास में संज्ञानात्मक प्रक्रिया और क्षमताओं में परिवर्तन शामिल हैं। पियागेट के दृष्टिकोण

* डॉ. ममता शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (बीपीसी 002, खंड 1 से अनुकूलित कुछ सामग्री)

में, प्रारंभिक संज्ञानात्मक विकास में कार्यों के आधार पर प्रक्रियाएं शामिल हैं और बाद में मानसिक कार्यों में परिवर्तन में प्रगति होती है।

पियागेट की थ्योरी की मुख्य अवधारणाएँ:

- **स्कीम्स**: स्कीम्स ज्ञान की श्रेणियां हैं जो हमें दुनिया की व्याख्या और समझने में मदद करती हैं।
- **अनुकूलन**: पियाजे ने एक मौलिक जैविक प्रक्रिया के रूप में अनुकूलन को देखा। सभी जीवित चीजें एक तंत्रिका तंत्र या मस्तिष्क के बिना भी अनुकूल होती हैं। अनुकूलन और आवास अनुकूलन प्रक्रिया के दो पहलू हैं।
- **परिपाक(एसिमिलेशन)**: हमारे पहले से मौजूद नई जानकारियों को लेने की प्रक्रिया स्कीमा को आत्मसात के रूप में जाना जाता है।
- **समायोजित**: समायोजित में नई जानकारी या नए अनुभवों के परिणामस्वरूप मौजूदा स्कीमा, या विचारों को बदलना शामिल है। इस प्रक्रिया के दौरान नए स्कीमा भी विकसित किए जा सकते हैं।
- **संतुलन**: पियागेट का मानना था कि सभी बच्चे आत्मसात और आवास के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करते हैं, जो कि एक तंत्र पियागेट के माध्यम से प्राप्त किया जाता है जिसे संतुलन कहा जाता है।

संज्ञानात्मक विकास के चरण: पियागेट ने चरणों के संदर्भ में संज्ञानात्मक विकास की चिंता की:

चरण I –संवेदी मोटर चरण:

पहला चरण Sensorimotor चरण है जो जन्म से लेकर लगभग दो वर्ष तक रहता है। शिशु दुनिया को समझने के लिए अपनी या अपनी इंद्रियों और मोटर क्षमताओं का उपयोग करता है, जोकि सजगता के साथ शुरुआत करता है और संसरिमोटर कौशल के जटिल संयोजनों के साथ समाप्त होता है। इस चरण को नीचे दिए गए अनुसार छह अलग-अलग उप-चरणों में विभाजित किया जा सकता है।

- i) रिप्लेक्सिस (0-1 महीने): बच्चा शुद्ध रूप से जन्मजात सजगता जैसे कि चूसने और देखने के माध्यम से पर्यावरण को समझता है।
- ii) प्राथमिक परिपत्र प्रतिक्रियाएँ (1-4 महीने): एक से चार महीने के बीच, बच्चा अपनी खुद की एक क्रिया पर काम करता है जो एक उत्तेजना के रूप में कार्य करता है, जो एक ही कार्रवाही के साथ और हमारे आसपास प्रतिक्रिया करता है।
- iii) माध्यमिक परिपत्र प्रतिक्रियाएँ (4-8 महीने): बच्चा दुनिया पर अधिक केंद्रित हो जाता है और वातावरण में प्रतिक्रिया को ट्रिगर करने के लिए जानबूझकर एक कार्रवाही को दोहराना शुरू कर देता है।
- iv) माध्यमिक प्रतिक्रियाओं का समन्वय (8-12 महीने): बच्चा मांग वस्तु पर कुछ विशेष ध्यान केंद्रित करता है। प्रतिक्रियाएँ अधिक समन्वित और जटिल हो जाती हैं।
- v) तृतीयक परिपत्र प्रतिक्रियाएँ (12-24 महीने): बच्चे इस उप-चरण के दौरान परीक्षण-और-त्रुटि प्रयोग की अवधि शुरू करते हैं।
- vi) प्रारंभिक प्रतिनिधि विचार: बच्चे अंतिम संवेदी मोटर उप-चरण में दुनिया की घटनाओं या वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रतीकों को विकसित करना शुरू करते हैं।

चरण II—प्रीऑपरेशनल

प्रीऑपरेशनल स्टेज लगभग दो से सात साल की उम्र तक रहता है। अब जबकि बच्चे के पास मानसिक प्रतिनिधित्व है और उसे दिखाने में सक्षम है, यह प्रतीकों के उपयोग के लिए एक छोटा कदम है। भाषा का विकास इस अवधि में होती है। पियागेट ने कहा कि इस चरण में बच्चे अन्य लोगों के दृष्टिकोण को लेने में असमर्थ हैं, जिसे उन्होंने इगोसेंट्रिज्म (egocentrism) कहा है। जब बच्चे दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण का अनुभव करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं, तो इगोसेंट्रिज्म कहते हैं।

चरण III— ठोस संचालन चरण (Concrete operations stage)

ठोस परिचालन चरण सात साल की उम्र के आसपास शुरू होता है और लगभग बारह वर्ष की आयु तक जारी रहता है। इस समय के दौरान, बच्चे मानसिक व्यवहारों की बेहतर समझ प्राप्त करते हैं। वे ठोस घटनाओं के बारे में तार्किक रूप से सोचने लगते हैं, लेकिन अमूर्त या काल्पनिक अवधारणाओं को समझने में कठिनाई होती है।

तर्क

पियागेट ने कहा कि ठोस परिचालन अवस्था में बच्चे आगमनात्मक तर्क के उपयोग में काफी अच्छे होते हैं। आगमनात्मक तर्क (Inductive logic) में एक विशिष्ट अनुभव से एक सामान्य सिद्धांत तक जाना शामिल है।

संरक्षण

यह इस विचार को संदर्भित करता है कि उपस्थिति में परिवर्तन के बावजूद एक मात्रा समान रहती है। यदि आप एक प्रीऑपरेशनल चरण के बच्चे को एक पंक्ति में चार मार्बल्स दिखाते हैं और फिर उसे फैला देते हैं तो वे बाहर फैले हुए मार्बल्स, को पहले की तुलना में अधिक मार्बल्स समझेंगे। दूसरी ओर, ठोस संचालन वाला बच्चा जानता होगा कि अभी भी चार ही पत्थर हैं।

उलटने अथवा पुलटने योग्यता (प्रतिवर्तीता)

सात या आठ साल की उम्र तक, बच्चे पदार्थ के संरक्षण का विकास करते हैं: यदि मिट्टी का एक गोला लिया जाता है और इसे एक लंबी पतली छड़ में घुमाया जाता है, या इसे दस छोटे टुकड़ों में विभाजित किया जाता है, तो बच्चा जानता है कि अभी भी मिट्टी की उतनी ही मात्रा है। और उसे पता चल जाएगा कि, अगर आप इसे वापस एक ही गेंद में घुमाते हैं, तो यह बिल्कुल वैसा ही दिखाई देगा जैसा कि उसने किया था - एक विशेषता जिसे प्रतिवर्तीता के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा, एक बच्चा इस चरण के दौरान वर्गीकरण और संचलन भी सीखता है।

चरण IV- औपचारिक परिचालन चरण (Formal Operational Stage)

औपचारिक परिचालन चरण लगभग बारह वर्ष से शुरू होता है और वयस्कता तक रहता है। इस समय के दौरान, लोग अमूर्त अवधारणाओं, कटौतीत्मक तर्क और व्यवस्थित योजना के बारे में सोचने की क्षमता विकसित करते हैं।

तर्क

पियागेट का मानना था कि औपचारिक परिचालन चरण के दौरान निगमनात्मक तर्क (Deductive logic) महत्वपूर्ण हो जाते हैं और इसके लिए एक विशिष्ट परिणाम निर्धारित करने के लिए एक सामान्य सिद्धांत का उपयोग करने की क्षमता की आवश्यकता होती है।

इस तरह की सोच में काल्पनिक परिस्थितियां शामिल हैं और विज्ञान और गणित में अक्सर इसकी आवश्यकता होती है।

सामान्य सोच

अमूर्त अवधारणाओं के बारे में सोचने की क्षमता इस चरण के दौरान उभरती है। केवल पिछले अनुभवों पर निर्भर रहने के बजाय, बच्चे संभावित परिणामों और कार्यों के परिणामों पर विचार करना शुरू करते हैं।

समस्या का समाधान दृष्टिकोण

पहले के चरणों में, बच्चों ने समस्याओं को हल करने के लिए परीक्षण और त्रुटि का उपयोग करते हैं। इस चरण में किसी समस्या को व्यवस्थित और तार्किक तरीके से हल करने की क्षमता उभरती है। बच्चे अक्सर किसी समस्या को हल करने के लिए एक संगठित दृष्टिकोण की योजना बनाने में सक्षम होते हैं।

9.2.2 वायगोत्स्की की थ्योरी

लेव वायगोत्स्की, एक रूसी मनोवैज्ञानिक और जीन पियागेट के समकालीन उन्होंने संज्ञानात्मक विकास के एक सिद्धांत का प्रस्ताव रखा जिसे 'सोशियो कल्चरल थ्योरी' के रूप में जाना जाता है।

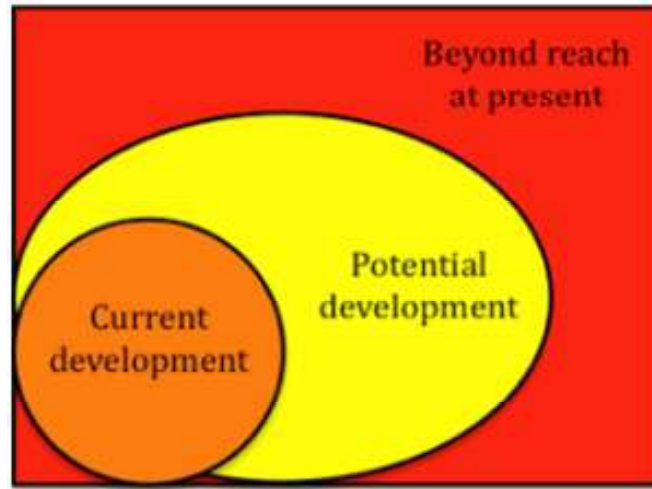
प्रमुख सिद्धांत

- बच्चों के समाज और संस्कृति उनके संज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- संकेत प्रणाली (sign system) या समाज की भाषा, ज्ञान प्राप्त करने में एक उपकरण के रूप में काम करती है।
- अन्य लोगों और विशेष रूप से अधिक जानकार लोगों और वयस्कों के इनपुट से अनुभूति के विकास को प्रभावित करती है।

सेंट्रल कॉन्सेप्ट्स

अन्य अधिक जानकार ((More Knowledgeable Others) (MKO): उन्होंने बुद्धि को "शिक्षा से सीखने की क्षमता" के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार, ये वे लोग हैं, जो अधिक जानकार हैं और किसी विशेष डोमेन में बेहतर विशेषज्ञता रखते हैं। ये MKO बच्चे के कौशल को सुधारने में मदद कर सकता है। MKO को सभी उदाहरणों में एक व्यक्ति होने की आवश्यकता नहीं है। कभी-कभी, MKO कंप्यूटर भी हो सकते हैं।

समीपस्थ विकास क्षेत्र (Zone of Proximal Development) (ZPD): यह वायगोत्स्की के सिद्धांत की प्रमुख विशेषता है। MKO की अवधारणा ZPD के साथ निकटता से संबंधित है। वायगोत्स्की के अनुसार, ZPD किसी के सहयोग और विकास के संभावित स्तर के बिना प्राप्त विकास के वर्तमान स्तर के बीच का अंतर है जो MKO के मार्गदर्शन में प्राप्त किया जा सकता है। हालाँकि, उपलब्ध ज्ञान का स्तर बच्चे की व्यापक क्षमता के अनुसार उपयुक्त होना चाहिए।



चित्र 9.1 : ZPD प्रदर्शित करने के लिए आरेख

स्रोत: <https://psychohawks.wordpress.com>

मचान Scaffolding : मचान एक अस्थायी संरचना है, जो लकड़ी के तख्तों और धातु के खंभों से बनी होती है, जिससे भवन निर्माण, रखरखाव और मरम्मत में काम करने वालों का समर्थन किया जाता है। वायगोत्स्की ने MKO द्वारा छात्रों को नई अवधारणाओं और कौशलों को सीखने के लिए प्रदान किए गए सामाजिक और निर्देशात्मक समर्थन का वर्णन करने के लिए इस शब्द का उपयोग किया। एक बार जब छात्र द्वारा कौशल सीख लिया जाता है, तो जिस तरह निर्माण पूरा करने के बाद मचान हटा दिया जाता है उसी तरह निर्देशात्मक समर्थन वापस ले लिया जाता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

बताएं कि क्या निम्नलिखित 'सही' या 'गलत' हैं:

- 1) बच्चों के समाज और संस्कृति उनके संज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- 2) तर्क इस विचार को संदर्भित करता है कि उपस्थिति में परिवर्तन के बावजूद एक मात्रा समान रहती है।
- 3) वायगोत्स्की ने नई अवधारणाओं और कौशलों को सीखने के लिए छात्रों को MKO द्वारा प्रदान किए गए सामाजिक और निर्देशात्मक समर्थन का वर्णन करने के लिए मचान शब्द का इस्तेमाल किया।
- 4) नई सूचना या नए अनुभवों के परिणामस्वरूप, विद्युतीकरण में मौजूदा स्कीमा, या विचारों को बदलना शामिल है।
- 5) पहले चरणों में, बच्चों ने समस्याओं को हल करने के लिए परीक्षण और त्रुटि का इस्तेमाल किया।

9.3 नैतिक विकास: कोहलबर्ग का सिद्धांत

जीन पियागेट द्वारा प्रस्तावित नैतिक विकास के विचार का विस्तार करते हुए, लॉरेंस कोहलबर्ग ने नैतिक विकास का एक पूरा सिद्धांत विकसित करने के लिए जीवन भर काम किया। कहानी बताने की तकनीक का उपयोग करते हुए, उन्होंने बच्चों पर कई अध्ययन किए। उनके अध्ययन की कहानियाँ आमतौर पर कुछ प्रकार की नैतिक दुविधाओं के इर्द-गिर्द घूमती हैं। हर कहानी के अंत में, वह अपने प्रतिभागियों (बच्चों) से कुछ सवाल पूछते

थे और तर्क को रेखांकित करने के लिए उनके उत्तरों का विश्लेषण करते थे। अपने अध्ययन के आधार पर, उन्होंने प्रस्ताव दिया कि नैतिक विकास में छह चरण शामिल हैं और इन छह चरणों को आगे तीन स्तरों में बांटा जा सकता है। ये तीन स्तर इस प्रकार हैं:

स्तर 1: पूर्व-पारंपरिक नैतिकता (Pre Conventional Morality)

इसमें नैतिक विकास के पहले दो स्तर शामिल हैं। यहाँ नैतिकता का आकलन वयस्कों के मानकों और एक कार्रवाई के परिणाम के आधार पर किया जाता है।

चरण I (आज्ञाकारिता और सजा अभिविन्यास) – बच्चों के लिए वो अनैतिक है जिसे प्राधिकरण द्वारा दंडित किया जाता है।

चरण II (व्यक्तिवाद और विनिमय) – यह चरण स्व-चालित है और बच्चों को पहली बार समझ में आता है कि अलग-अलग व्यक्ति के पास अलग-अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं। एक कार्यवाही को नैतिक रूप से सही माना जाता है वो व्यक्ति के सर्वोत्तम हित में हो।

स्तर 2: पारंपरिक नैतिकता (Conventional Morality)

इस स्तर में चरण तीन और चार शामिल हैं। इस स्तर के दौरान, बच्चे नैतिकता का न्याय करने के लिए समाज के मूल्य को आंतरिक बनाना शुरू करते हैं।

चरण III (अच्छा पारस्परिक संबंध) – नैतिक मूल्यों को पहचानने के संदर्भ में अभिनेता का इरादा अधिक महत्वपूर्ण होता है। यदि बच्चे का इरादा दूसरों की सहमति या समाज की स्वीकृति हासिल करने का है तो अभिनेता को नैतिक रूप से सही माना जाएगा।

चरण IV (सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना) – इस चरण में नैतिकता का निर्णय एक कर्तव्य, कानून और सामाजिक व्यवस्था पर आधारित हो जाता है।

स्तर 3: पोस्ट कन्वेंशनल मोरैलिटी (Post Conventional Morality)

अंतिम स्तर में नैतिक विकास के चरण पाँच और छह शामिल हैं। कोहलबर्ग के अनुसार, इस स्तर पर बहुत कम लोग पहुँच पाते हैं। यहाँ, सामाजिक शासन और व्यवस्था पर व्यक्तिगत परिप्रेक्ष्य को अधिक महत्व दिया जाता है। व्यक्तिगत न्याय नैतिकता, बुनियादी मानवाधिकारों और न्याय पर आधारित होती है।

चरण V (सामाजिक अनुबंध और व्यक्तिगत अधिकार) – इस चरण में, व्यक्ति या बच्चा समझता है कि विभिन्न लोग और समुदाय अलग-अलग विचार और कानून रख सकते हैं। समाज के कानून कठोर नियम नहीं हैं और इन्हें समाज के समय और आवश्यकता में बदलाव के साथ बदलना चाहिए।

स्टेज VI (यूनिवर्सल प्रिंसिपल्स) – व्यक्ति नैतिकता को कुछ सार्वभौमिक सिद्धांतों के आधार पर अभिनेता की व्यक्तिगत न्याय का निरीक्षण करता है जो कि समाज के नियमों और विनियमों से परे होती है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

खाली जगह भरें:

- 1) नैतिकता का निर्णय एक पर आधारित है।
- 2) लेवल के दौरान, बच्चे नैतिकता का न्याय करने के लिए समाज के मूल्य को आंतरिक बनाना शुरू करते हैं।

- 3) ने प्रस्तावित किया कि नैतिक विकास में छह चरण होते हैं और इन छह चरणों को आगे तीन स्तरों में बाँटा जा सकता है।
- 4) चरण स्व-चालित है और बच्चों को पहली बार समझ में आया कि अलग-अलग व्यक्ति के अलग-अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं।
- 5) मानको आंकने के मामले में अभिनेता का इरादा अधिक महत्वपूर्ण है।

9.4 सारांश

इस अध्याय में, संज्ञानात्मक विकास के बारे में विभिन्न विचारों और सिद्धांतों को कवर किया गया था। यह अध्याय जीवन के संज्ञानात्मक विकास के अर्थ, विशेषता के साथ शुरू होता है। फिर, हमने पियागेट और वायगोत्स्की के संज्ञानात्मक अवमूल्यन के सिद्धांतों पर चर्चा की। अंत में, हमने कोहलबर्ग के सिद्धांत की मदद से नैतिक विकास के बारे में बात की।

9.5 इकाई अभ्यास प्रश्न

- 1) संज्ञानात्मक विकास से आप क्या समझते हैं?
- 2) जीन पियागेट द्वारा प्रस्तावित संज्ञानात्मक विकास के चरणों पर एक नोट लिखें।
- 3) आपका क्या मतलब है:
 - ए) योजना
 - ख) परिपाक
 - सी) निवास
 - घ) अनुकूलन
- 4) 'समीपस्थ विकास के क्षेत्र' से आप क्या समझते हैं? ' यह अवधारणा मचान की अवधारणा से कैसे संबंधित है?
- 5) कोहलबर्ग द्वारा समझाया गया नैतिक विकास के विभिन्न चरणों को समझाइए।

9.6 शब्दावली

- स्कीमा** : स्कीमा ज्ञान की श्रेणियां हैं जो हमें दुनिया की व्याख्या और समझने में मदद करती हैं।
- अनुकूलन** : पायगेट ने एक मौलिक जैविक प्रक्रिया के रूप में अनुकूलन को देखा। सभी जीवित चीजें एक तंत्रिका तंत्र या मस्तिष्क के बिना भी अनुकूल होती हैं। अनुकूलन और आवास अनुकूलन प्रक्रिया के दो पहलू हैं।
- परिपाक (एसिमिलेशन)** : हमारे पहले से मौजूद स्कीमा में नई जानकारी लेने की प्रक्रिया को आत्मसात के रूप में जाना जाता है।
- संरक्षण** : यह इस विचार को संदर्भित करता है कि उपस्थिति में परिवर्तन के बावजूद एक मात्रा समान रहती है।

- अधिक जानकार अन्य** : ये वे लोग हैं, जो अधिक जानकार हैं और सीखने वाले की तुलना में किसी विशेष क्षेत्र में बेहतर विशेषज्ञता रखते हैं।
- समायोजित** : जीन पियागेट के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत का हिस्सा। यह एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम नई वस्तु या स्थिति से निपटने के लिए एक स्कीमा विकसित या बदलते हैं।

9.7 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- 1) सत्य
- 2) असत्य
- 3) सत्य
- 4) असत्य
- 5) सत्य

स्व-मूल्यांकन प्रश्न

- 1) कर्तव्य, कानून और सामाजिक व्यवस्था
- 2) पारंपरिक नैतिकता
- 3) कोहलबर्ग
- 4) व्यक्तिवाद और विनिमय
- 5) नैतिक

9.8 संदर्भ और सुझाव पठन

Ormrod, J. E. (2008). *Educational Psychology: Developing Learners* (6th ed.). Upper Saddle River, NJ: Merrill.

Smith, P., Cowie, H. & Blades, M. (2003) *Understanding Children's Development*. Oxford: Blackwell.

Light, P., Sheldon, S. & Woodhead, M. (1991) *Learning to Think*. London; Routledge.

Keil, F. (2013). *Developmental Psychology: The Growth of Mind and Behavior*. WW Norton & Company.

Berger, K. S. (2009). *Invitation to the Life Span*. Macmillan.

Bremner, J. G. (2017). *An Introduction to Developmental Psychology*. John Wiley & Sons.

Geary D.C. and Bjorklund D.F. (2000). *Evolutionary Developmental Psychology*. *Child Development* 71(1), 57–65.

Lerner R.M. (1998). Theories of human development: contemporary perspectives. *Handbook of Child Psychology*. Vol. 1. Theoretical Models of Human Development (ed. R.M. Lerner), 5th ed., pp. 1–24. New York: Wiley.

Lerner R.M., Fisher C.B., and Weinberg R.A. (2000). Toward a science for and of the people: promoting civil society through the application of developmental science. *Child Development* 71(1) 11–20.

Lewis M.D. (2000). The promise of dynamic systems approaches for an integrated account of human development. *Child Development* 71(1), 36–43.

Nelson C.A. and Bloom F.E. (1997). *Child Development and Neuroscience*. *Child Development* 68(5), 970–987.

Pellegrini A.D. and Bjorklund D.F. (1998). *Applied Child Study: A Developmental Approach*, 3rd edn., 243 pp. Mahwah, N.J.: Lawrence Erlbaum.

Tandon, R. K. (2002). *Child Psychology*. APH Publishing Corporation.

छवियों के लिए संदर्भ

Diagram to demonstrate the ZPD. Retrieved November 2, 2018, from <https://psychohawks.wordpress.com/2010/11/03/theories-of-cognitive-development-lev-vygotsky/>